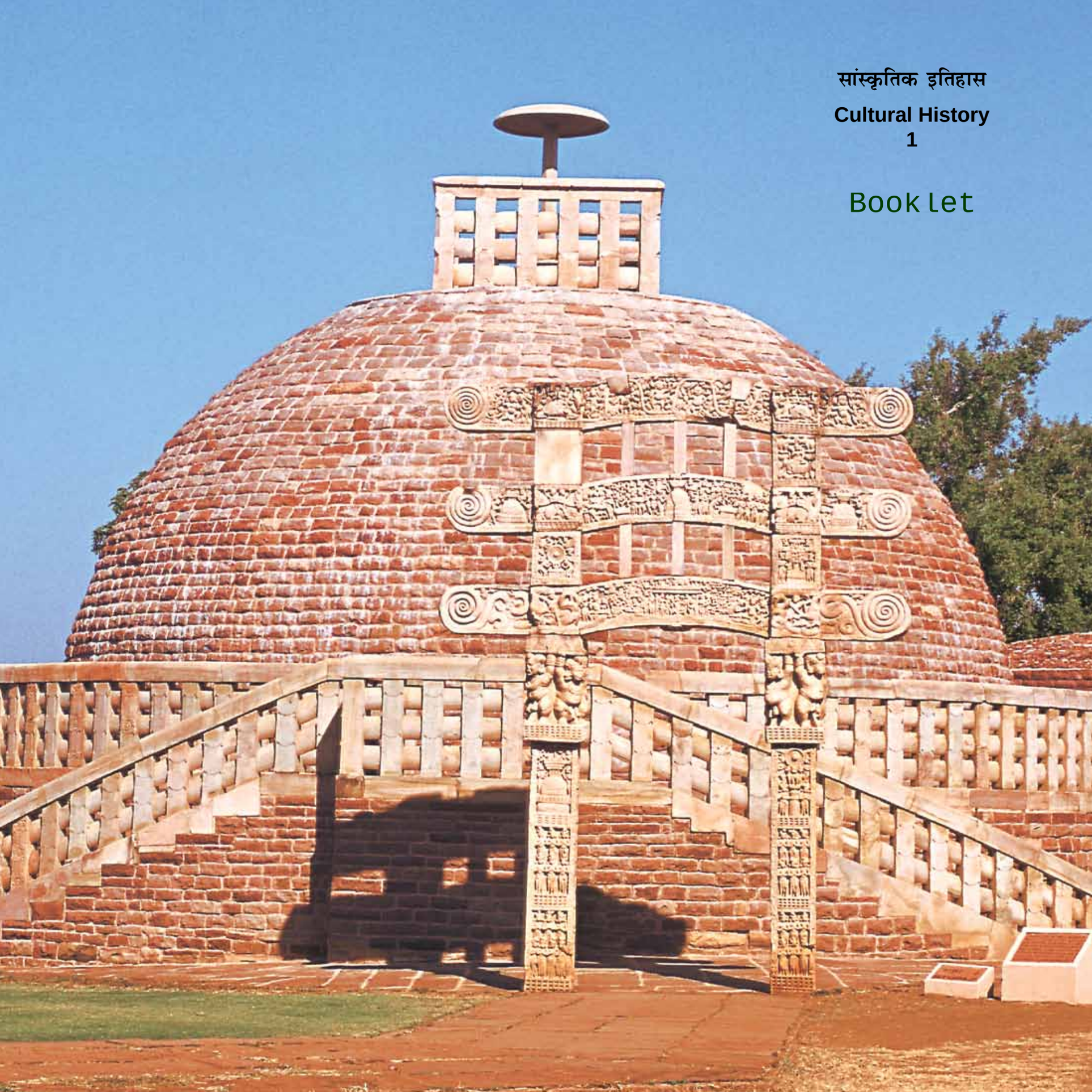

सांस्कृतिक इतिहास

Cultural History
1

Book let

वेदिका
Vedika

पवित्र स्थल या वस्तु की पवित्रता बनाए रखने हेतु उसके चारों ओर निर्मित सतह से जरा ऊंचे घेरे या रेलिंग को वेदिका कहते हैं।

A railing or fence protecting a sacred structure or a spot or object of veneration is known as Vedika.

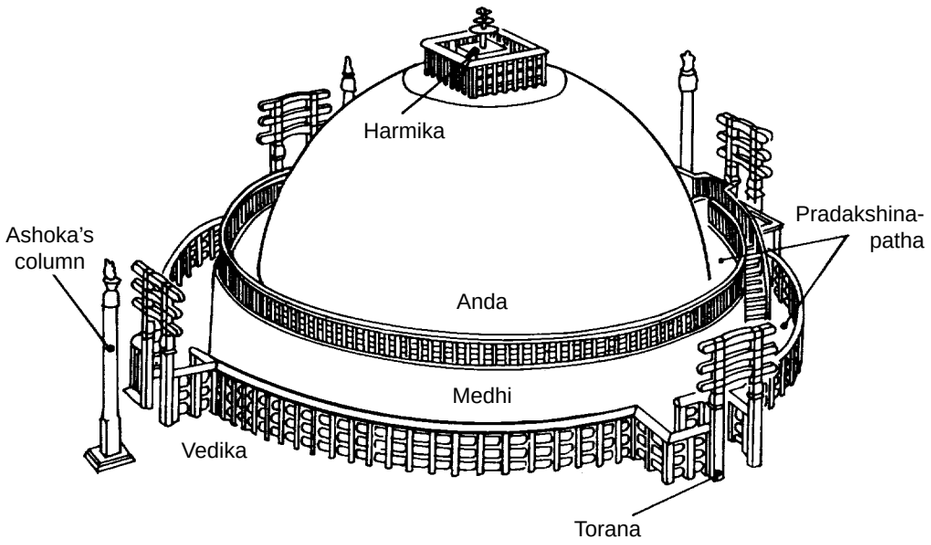

PLAN OF STUPA

मेधि
Medhi

स्तूप के चारों तरफ के ऊंचे उठे पथ (पटरी) को मेधि कहते हैं। इसे स्तूप की प्रदक्षिणा के लिए उपयोग में लाया जाता है।

The berm of a stupa is known as Medhi. The berm (medhi) level of the stupa is used for circumambulation.

हर्मिका
Harmika

स्तूप के अंड भाग के शीर्ष की चौकोर रेलिंग (घेरे) को हार्मिका कहते हैं। यह स्तूप के एक महत्वपूर्ण भाग यष्टि को घेरे रहती है।

The square superstructure in the form of a railing on top of the dome of stupa is known as Harmika. It encloses the pole Yasti, an important part of the stupa.

प्रदक्षिणा पथ
Pradakshinapatha

मंदिर या पूजा स्थल के चारों तरफ बने सामान्य सतह से ऊंचे पथ को प्रदक्षिणा पथ कहते हैं। श्रृद्धालुगण इस पथ पर घड़ी के अनुरूप बायीं दिशा से प्रदक्षिणा प्रारंभ करते हैं।

A path used for clockwise circumambulation surrounding an image, shrine or building is known as Pradakshinapatha.

तोरण
Torana

तोरण मूलत: प्रवेशद्वार होता है। इसके दो उर्ध्वाधर स्तंभों पर तीन आड़े प्रस्तर पाद आधारित होते हैं। इन स्तंभों के बीच से निकल कर श्रद्धालुगण स्तूप में प्रवेश करते हैं। इसकी दोनों तरफ वन्य एवं वनस्पति जगत के सजावटी प्रतीक उत्कीर्ण किए जाते हैं। साथ ही भवन निर्माण की बारीकियां भी होती हैं।

The Torana is basically a gateway. It consists of two upright pillars supporting three architraves that makes an entry space through which the devotee gains an access to the stupa. Both its sides are carved with the decorative motifs of figures, animals, plant life and architectural details.

भारत में विद्वानों, कलाकारों और शिक्षाविदों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझने तथा उसके प्रति प्रेम का प्रसार करने के लिए स्कूलों में सांस्कृतिक शिक्षा को भी शामिल करने के लिए विशेष बल दिया है। पूरे देश में युवा पीढ़ी को एक क्रम से भारत की कलात्मक उपलब्धियों के अध्ययन के लिए अवसर दिए जाने चाहिए जो उन्हें सदियों से विरासत में हमें प्राप्त होने वाली चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के खूबसूरत कार्य के संरक्षण के लिए कार्य और देख-रेख करने के लिए प्रेरित करेंगे।

भारतीय इतिहास की शिक्षा देने के लिए एक क्रम में पूरक सामग्री उपलब्ध है। इस शैक्षिक सामग्री में प्रसिद्ध भारतीय चित्रों, मूर्तियों और वास्तुकला के 24 सचित्र उदाहरण हैं। यह कला के कार्य भारतीय इतिहास के पूर्व काल के हैं, जिसे हमारे स्कूल के पाठ्यक्रम में प्राचीन इतिहास की संज्ञा दी जाती है। यह लगभग 8000 ईसा पूर्व के पाषाणकाल से 8वीं सदी तक भारत में मानव समुदाय के प्राचीनतम रहन-सहन के इतिहास तक को अपने भीतर समेटता है। इस शैक्षिक सामग्री को प्रस्तुत करने का उद्देश्य है– जब छात्र इन चित्रों से अध्ययन करेंगे और सीखेंगे तब भारतीय इतिहास की समझ और संस्कृति के विकास के बारे में जानकारी बढ़ेगी।

छात्रों को अक्सर भारतीय कला की मूल कला वस्तुओं या पुनर्निमितियों का अध्ययन करने का अवसर नहीं मिल पाता। आशा की जाती है कि यह शैक्षिक सामग्री छात्रों को भारतीय कला में सौन्दर्य के प्रति सुग्राही बनाएगी और भारत की समृद्ध तथा विविध सांस्कृतिक विरासत के प्रति प्रेम, रुचि और जागरुकता उत्पन्न करेगी।

सदियों से लोगों की कलात्मक अभिव्यक्तियां ऐतिहासिक जानकारी का मूल्यावान स्रोत रही है। चित्रों और मूर्तियों से हम उस समय के लोगों के दैनिक जीवन का अध्ययन कर सकते हैं। हम सामाजिक और आर्थिक ढांचे के विषय में भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, वेशभूषाओं और आभूषणों से हम जान सकते हैं कि तब बुनकर और सुनार रहे होंगे। खुदाई में प्राप्त अन्य वस्तुएं हमें इस बात की जानकारी देती हैं कि उस ऐतिहासिक काल के दौरान कई व्यापार चलते होंगे और हस्तशिल्पी भी रहे होंगे।

भारतीय कला के अध्ययन में हम शताब्दियों पूर्व भारत में रहने वाले लोगों के जीवन मूल्यों तथा मान्यताओं के विषय में सीख सकते हैं। हमारे कई चित्रों और मूर्तियों में आप पशुओं, पक्षियों, सुंदर पेड़ों और फूलों को देखेंगे क्योंकि भारतीयों ने हमेशा प्रकृति को प्यार किया है और आदर दिया है।

Scholars, artists and educationists in India have strongly recommended that Cultural Education be included in schools to spread love and understanding for India's rich cultural heritage. The younger generation throughout the country must be provided an opportunity to study India's artistic achievements in order to motivate them to care and work for the conservation of the beautiful works in architecture, sculpture and painting that have been handed down to us through the ages.

In order to provide supplementary material to teach Indian history, 24 illustrated representations of famous land-marks of Indian architecture, sculpture and painting are provided in this Cultural History package. These works of art belong to the earlier period known as Ancient History in the school syllabus. This period covers the history of the earliest habitations of human beings in India from the Stone Age period of approximately 8000 B.C.E. to the 8th century C.E. The objective of presenting this cultural package being, that when students study and learn from these pictures, their understanding of Indian History and the development of India's culture will be enhanced.

Students do not often get an opportunity to study actual art objects or reproductions of Indian art. It is hoped that this cultural package will sensitize students to the beauty in Indian art and create a love, interest and concern for India's rich and diverse cultural heritage.

The artistic expression of people through the ages is a valuable source of historical information. From paintings and sculptures, we can make a study of the daily life of the people. We can derive important information about social and economic patterns. For instance, from costumes and jewellery, we know there must have been weavers and goldsmiths. Other articles discovered during excavations tell us about the variety of craftsmen and traders that must have existed during this historical period.

From the study of Indian art, we can also learn about the values and beliefs of people who lived in India centuries ago. In many of our paintings and sculptures you will see animals and birds, beautiful trees and flowers, because Indians have always loved and respected nature.

2 3a 1

कला लोगों की रचनात्मक अभिव्यक्ति है। जहां तक हम जानते हैं, मनुष्य ही एक ऐसा जीव है जो विविध कला रूपों द्वारा सौन्दर्य तथा भावना को अभिव्यक्ति दे सकता है। कला, रचनाकार और दर्शक, दोनों को आनन्द प्रदान कर संसार को और सुन्दर बना सकती है। कलात्मक अभिव्यक्ति संगीत, नृत्य, नाटक, पुतली के रूप में हो सकती है– ये निष्पादन कलाएं हैं। दुर्भाग्यवश, हमारे पास शिल्पकला और चित्रों के कुछ दृश्यों को छोड़कर, जिनमें संगीतज्ञों तथा नर्तकों को दिखाया गया है, प्राचीन काल की निष्पादन कलाओं का अधिक प्रमाण नहीं है। इनसे हम इतिहास के एक निश्चित काल के संगीत वाद्यों और नृत्य शैलियों का अध्ययन कर सकते हैं। अन्य कलाएं जैसे– चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला ऐसी सामग्री से बनी थी, जो सदियों से सुरक्षित हैं।

भारतीय छात्रों को उन विविध संप्रदायों द्वारा दिए गए योगदान का अध्ययन करने का भी अवसर दिया जाना चाहिए जिन्होंने भारत को अपना घर बनाया है। वे इस्लाम, ईसाई, बौद्धधर्म, जैनधर्म, हिन्दूधर्म और अन्य धर्मों के उपदेशों के विषय में सीख सकते हैं। छात्रों को प्रत्येक धर्म के दर्शन का चित्रकला, मूर्तिकल और संगीत में योगदान के विषय में भी जानना चाहिए ताकि वे इनके द्वारा समझ सकें कि भारत ही ऐसा देश है जिसमें प्रत्येक कला रूप में विविधता है। इन्हीं कला रूपों ने भारत को अधिक सुन्दर, प्रसिद्ध और विशिष्ट बनाया है तथा संसार में ऐसा अन्य कोई देश नहीं है। प्रत्येक काल, प्रत्येक दार्शनिक विचार अपने आप में विशिष्ट और सुंदर है और उसने विश्व संस्कृति में सांस्कृतिक योगदान के लिए भारत को प्रसिद्ध बनाया है।

सीसीआरटी आपके स्कूल का 24 चित्र भेंट कर रही है, इन्हें इन बीजों की तरह उपयोग में लाओ, जिनमें रचनात्मक और शैक्षिक गतिविधियां फूल-फल सकें।

Art is the creative expression of people. Man is the only being, as far as we know, who is able to respond to beauty and express this emotion through various creative expressions. Art bring lasting joy to both the creator and beholder. Artistic expressions can be in the form of *sangeet* (music and dance.), *natak* and *kathputli* (drama and puppetry), which are the performing arts. Unfortunately, we do not have much evidence of the performing arts of the ancient period except a few scenes in sculpture and painting showing dance and music performances. From these, we can make a study of the musical instruments and dance styles of a particular period in history. The other arts such as *chitrakala* (painting), *murtikala* (sculpture) and *vastukala*, the art of construction of buildings (architecture) were made out of materials which have survived through the ages.

Indian students should also have an opportunity to study the contributions made by various communities who have made India their home. They may learn about the teachings of Hinduism, Buddhism, Jainism, Christianity, Islam, Sikhism and other religions. Students should also learn about the contribution of a particular religious philosophy to painting, sculpture, music so that they may understand that perhaps India is the only inheritor of such a variety in each art form. Each period, each philosophic thought, beautiful and unique in its own way has made India famous for its cultural contribution to world culture.

The CCRT is gifting your school 24 pictures. Use them as the seeds from which many creative educational activities can grow.

10

11

12

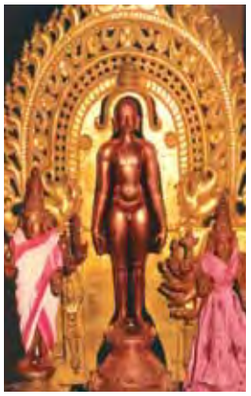

13

14

15

16

स्कूली छात्रों और अध्यापकों हेतु रचनात्मक गतिविधियां

Creative Activities for School Students and Teachers

ये 24 चित्र कक्षा या फिर या स्कूल में किसी मुख्य स्थान पर प्रदर्शित किए जा सकते हैं। चित्रों को शीर्षक और विवरण सहित कार्ड बोर्ड पर लगाया जा सकता है। चित्रों का उन गतिविधियों के साथ गहराई से अध्ययन किया जा सकता है, जो भारतीय कला का शैक्षिक मूल्य सामने लाती है। अध्यापक एक बार में कुछ चित्रों के साथ काम कर सकते हैं और नीचे सुझाई गई कुछ रचनात्मक गतिविधियों में लगाकर छात्रों को विश्वास दिला सकते हैं कि गतिविधियों द्वारा सीखने का आनन्द कुछ और है।

These 24 pictures can be displayed in the classroom or at any prominent place in the school. The pictures may be stuck on cardboard, with the title and description. The pictures can also be studied in depth, with activities that bring out the educational value of Indian art. The teacher can work with a few pictures at a time, ensuring students' enjoyment in learning by involving them in some creative activities suggested below :

9

6

7

8

4C

5a

5b

4a

4b

चित्र–1 गुफाएं, बाहरी दृश्य, भीमबेटका, मध्य प्रदेश
चित्र–1 गुफाएं, बाहरी दृश्य, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

- एक नक्शा बनाओ और उन स्थानों पर निशान लगाओ जहां भारत में पाषाण युग के दौरान मनुष्य रहता था।
- छात्रों से पाषाण युग के समय बने हुए भित्ति चित्रों के सामन चित्र बनाने के लिए कहो। दीवार पर या कार्ड पर या फिर लकड़ी की सतह पर मिट्टी का लेप लगाओ। चॉक या चावल का घोल (पानी के साथ मिला हुआ) लो और उसे सूखी मिट्टी की दीवार पर लगाओ। आकृतियां बनाने के लिए उंगलियों या छोटे ब्रश (कूंचियों) या डंडी का उपयोग करें।
- छात्रों को उनके जीवन की महत्वपूर्ण गतिविधियों–उनके जीवन, जन्म, बड़े होना, स्कूल जाना, खेलना, यात्रा, त्यौहार आदि के चित्र बनाने के लिए कहो।

Picture-1 Cave Dwelling, Bhimbetka, Madhya Pradesh
Picture-2 Wall Painting, Bhimbetka, Madhya Pradesh

- Draw a map and mark places where the stone age man lived in India.
- Ask students to prepare a mural (wall painting) like those of the stone age period. Apply mud paste on a wall, or on cardboard, or on a wooden surface. Take chalk, or rice paste (mix with water) and apply on the dry mud wall. Use finger, or a small brush or a stick to draw the figures.
- Ask students to paint pictures or important events in their life, birth, growing up, play, school, travel, festivals, etc.

चित्र-3 (अ) नगर की योजना, सिन्धु सभ्यता, लोथल, गुजरात
चित्र-3 (ब) गोदी-बाड़ा, सिन्धु सभ्यता, लोथल, गुजरात
चित्र-4 (अ) मोहर, सिन्धु सभ्यता, हड़प्पा, पाकिस्तान
चित्र-4 (ब) चित्रित पात्र, सिन्धु सभ्यता, लोथल, गुजरात
चित्र-4 (स) मिट्टी के खिलौने, सिन्धु सभ्यता, मोहजों-दड़ो, पाकिस्तान
चित्र-5 (अ) नृत्यांगना, कांस्य प्रतिमा, सिन्धु सभ्यता, मोहजो-दड़ो, पाकिस्तान
चित्र-5 (ब) पुजारी की मिट्टी की प्रतिमा, सिन्धु सभ्यता, हड़प्पा, पाकिस्तान

Picture-3 (a) Plan of the City, Indus civilization, Lothal, Gujarat
Picture-3 (b) Dockyard, Indus civilization, Lothal, Gujarat
Picture-4 (a) Seal, Unicorn, Indus civilization, Harappa, Pakistan
Picture-4 (b) Painted Pot, Indus civilization, Mohen-Jo-Daro, Pakistan
Picture-4 (c) Toy, Terracotta, Indus civilization, Mohen-Jo-Daro, Pakistan
Picture-5 (a) Dancing Girl, Bronze, Indus civilization, Mohen-Jo-Daro, Pakistan
Picture-5 (b) Priest, Clay, Indus civilization, Harappa, Pakistan

हड़प्पा काल के दौरान (लगभग 5000 वर्ष पूर्व) लोगों ने पहली बार बड़े पैमाने पर नगरों और शहरों का भारत में निर्माण किया। यह एक आश्चर्यजनक उपलब्धि थी।

– भारत के मानचित्र पर मुख्य नदियों को अंकित करो और उनके किनारे पर बसे सभी प्रसिद्ध नगरों पर निशान लगाओ।
– प्रत्येक छात्र, इन नगरों तथा लोगों के जीवन में नदियों के महत्व पर जानकारी एकत्रित कर सकता है–
– उनके अपने शहर या गांव का अध्ययन। छात्र निम्नलिखित जानकारी एकत्रित कर सकते हैं।
– पर्यावरण
– प्रकृति-वनस्पति, पशु पक्षी
– निवासी
– व्यवसाय
– संगीत, नृत्य, नाटक, प्रदेश की हस्तकला
– भाषा, रिवाज, त्यौहार
– महत्वपूर्ण स्थान
– छात्र निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिख सकते हैं या चित्र बना सकते हैं –

"गुजरात में 5000 वर्ष पूर्व लोथल के नगर में जीवन"।
"लोथल के नगर में मेरे जीवन की कहानी"।
"मेरा आदर्श नगर"।

During the Harappan period (approximately 5000 years ago), people built the first large scale cities and towns in India. This was an amazing achievement.

– On a map of India, draw the major rivers and mark all the famous cities built on their banks
– Each student can gather information about these cities, and the importance of the rivers in the lives of the people.
– Study of their own city or village. Students can collect the following information.
  – Climate
  – Nature-plants, animals, birds
  – Inhabitants
  – Occupations
  – Music, Dance, Drama, Crafts of the area
  – Language, Customs, Festivals
  – Important Places
  – Famous People
– Students can write an essay or paint on the following topics:

"Life in the city of Lothal, in Gujarat 5000 Years ago".
"The story of my life in the city of Lothal".
"My ideal city".

चित्र-6 चौरी (हवा करने वाला चंवर) वाहक, मौर्य वंश, पटना, बिहार

चित्र-7 सिंह प्रतीक, मौर्य वंश, सारनाथ, उत्तर प्रदेश

मौर्य काल भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण युग है। महान सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को प्रसारित किया और अहिंसा का पालन किया।

– राष्ट्रीय चिह्न : राष्ट्रीय चिन्ह वाली वस्तुएं एकत्रित करो। (डाक टिकट, सिक्के आदि)

– राष्ट्रीय चिह्न : भारतीय झण्डे पर एक कविता लिखो (सिंहों, चक्र, अन्य पशुओं, रंगों आदि के प्रतीकात्मक अर्थ पर)।

– निम्नलिखित पर कविता या निबन्ध लिखो या चित्र बनाओ।

भारत का राष्ट्रीय पशु : सिंह
भारत का राष्ट्रीय पक्षी : मोर
भारत का राष्ट्रीय फूल : कमल

Picture-6 Chauri Bearer, Mauryan Dynasty, Patna, Bihar

Picture-7 Lion Capitol, Mauryan Dynasty, Sarnath, Uttar Pradesh

The Mauryan period is an important era of Indian History. The great emperor Ashoka patronized the religion of Buddhism and practiced Ahimsa.

– National emblem : Collect items which have the national emblem. (Stamps, Coins, etc.)

– Write a poem on the emblem, Indian flag (on the symbolic meaning of the Lions, Wheel, other animals, colours etc.)

– Write a poem, essay or paint picture of India's

National Animal : Lion
National Bird : Peacock
National Flower : Lotus

चित्र-8 महाकपि जातक, भरहुत, मध्य प्रदेश

चित्र-9 सांची स्तूप, सांची, मध्य प्रदेश

चित्र-10 बुद्ध, गांधार प्रदेश

चित्र-11 बुद्ध का जीवन, सारनाथ, उत्तर प्रदेश

चित्र-12 महावीर जैन की आकृति, तमिलनाडु

चित्र-13 गोमतेश्वर, श्रवणबेलगोला, कर्नाटक

चित्र-14 रानी गुंफा, उदयगिरि, ओड़िशा

चित्र-17 बाहरी दृश्य, अजंता की गुफाएं, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

चित्र-18 बुद्ध का चित्र, अजंता की गुफाएं, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

चित्र-19 मूर्त फलक, महाबलिपुरम, तमिलनाडु

चित्र-20 त्रिमूर्ति, एलिफेंटा की गुफाएं, महाराष्ट्र

Picture-8 Mahakapi, Jataka, Bharhut, Madhya Pradesh

Picture-9 Sanchi Stupa, Sanchi, Madhya Pradesh

Picture-10 The Buddha, Gandhara Region

Picture-11 The Life of Buddha, Sarnath, Uttar Pradesh

Picture-12 Image of Mahavir Jain, Tamil Nadu

Picture-13 Gomatesvara, Sravanabelagola, Karnataka

Picture-14 Rani Gumpha, Udaigiri, Odisha

Picture-17 Exterior view, Ajanta Caves, Aurangabad, Maharashtra

Picture-18 Painting of Buddha, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

Picture-19 Sculptural Panel, Mahabalipuram, Tamil Nadu

Picture-20 Trimurti, Elephanta Caves, Maharashtra

बुद्ध और महावीर के जीवन की कहानियां हमें कई अच्छे पाठ और मूल्य सिखाती हैं जैसे– "प्रकृति के लिए आदर", "जीवन के लिए आदर", "सभी जीवित तथा निर्जीव वस्तुओं के लिए आदर", "सादगी और सत्य के लिए आदर"।

– छात्र बुद्ध/महावीर के जीवन पर एक छोटा नाटक तैयार कर सकते हैं।

– छात्र निम्नांकित विषयों पर चित्र बना सकते हैं या निबंध लिख सकते हैं–

"बुद्ध/महावीर का जीवन"

"बुद्ध/महावीर के उपदेश : वर्तमान में उनका महत्व और उपयोगिता"

"वह दिन जब मैं बुद्ध/महावीर से मिला"।

छात्र अपने प्रदेश और राज्य के पवित्र लोगों/संतों के चित्र तथा सूक्तियां एकत्रित कर सकते हैं

The stories of the lives of Buddha and Mahavir teach us many good lessons and values such as "Respect of Nature", "Respect of Life", "Respect for all Living and Non-Living things", "Respect for Simplicity and Truth".

– Students can prepare a small drama on the Life of Buddha or Mahavir.

– Students can paint a picture, or write an essay on–

"Life of Buddha or Mahavir"

"Teachings of Buddha or Mahavir : their importance and relevance today".

"The day I met the Buddha or Mahavir".

– Students can collect pictures and quotations of Holy people/Saints of their region and state.

चित्र-15 मंदिर क्र. 17, सांची, मध्य प्रदेश
चित्र-16 लौह स्तंभ, दिल्ली

- भारत का मानचित्र बनाओ और उसमे महत्वपूर्ण मंदिर दिखाओ।
- भारत के प्रसिद्ध मंदिरों के चित्र एकत्रित करो और एक प्रदर्शनी लगाओ।
- पशु, पक्षी और पौधों के नमूनों का उपयोग करते हुए नमूने और डिजाइन बनाओ।
- निम्नलिखित पर चित्र और जानकारी एकत्रित करें–
  - आपके प्रदेश के पेड़/पशु/पक्षी/पौधे
  - भारत के दुर्लभ पशु/पौधे
- सामान्य रूप में प्रकृति और कला में प्रकृति पर प्रश्नोत्तरी का संचालन करो। (प्रश्नों में प्रकृति और कला के सभी पहलू जैसे मूर्तिकला, चित्र, नृत्य, संगीत, नाटक आदि शामिल होने चाहिए।)
- निम्नलिखित विषयों पर वाद-विवाद प्रतियोगिताएं संचालित करो–

  (i) प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत की कीमत पर विकास नहीं होना चाहिए।

  (ii) विज्ञान और तकनीक के नाम पर मनुष्य प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है।
- अधोलिखित विषयों पर भाषण/प्रतियोगिताएं आयोजित करो–

  (i) मनुष्य और विकास के प्रति पशुओं का दृष्टिकोण

  (ii) क्या हमारे स्रोत हमेशा रहेंगे?

  (iii) हम जो कुछ भी प्रकृति से लेते हैं उसके लिए क्या देते है?
- पोस्टर अभियान आयोजित करो। छात्र निम्न विषयों पर प्रतीकात्मक चित्र चित्रित कर सकते हैं और नारे लिख सकते हैं–

  "भारत मेरा देश है"

  "हम एक हैं"

  "हमारी प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत : इसे बचाओ"

Picture-15 Temple No. 17, Sanchi, Madhya Pradesh
Picture-16 Iron Pillar, Delhi

- Draw a map of India and locate important temples
- Collect pictures of famous temples of India, and make an exhibition.
- Make patterns and designs using animal, bird and plant motifs.
- Collect pictures and information on :
  - Animal/Birds/Plants/Trees of your region
  - Rare Animals/Plants of India
- Conduct a Quiz on Nature in General/Nature in Art

  (Questions should cover all aspects of Nature and all the arts, e.g. sculpture, painting, dance, music, drama etc.)
- Conduct Debates, Competitions on following Topics :

  (i) Development should not be at the cost of our Natural and Cultural Heritage.

  (ii) In the name of Science and Technology, man is interfering with Nature's Master Plan.
- Organise Elocution Competitions on the following Topics :

  (i) An animals point of view of Man and Development

  (ii) Will our Resources last for ever?

  (iii) What do we give for all that we take from Nature?
- Organise a poster campaign. Students can paint a symbolic picture and write slogans on the following topics :

  "India is my country"

  "We are one"

  "Our Natural and Cultural Heritage : Save it

चित्र-21	संथोम कैथेड्रल, चेन्नई, तमिलनाडु
चित्र-22	अगियारी, मुंबई, महाराष्ट्र
चित्र-23	अगियारी, मुंबई, महाराष्ट्र
चित्र-24	अगियारी, मुंबई, महाराष्ट्र

Picture-21	Santhom Cathedral, Chennai, Tamilnadu
Picture-22	Fire Temple, Mumbai, Maharashtra
Picture-23	Jama Masjid, Delhi
Picture-24	Golden Temple, Amritsar, Punjab

भारत कई धर्मों का देश है। प्रत्येक धर्म ने भारत के विकास में मूल्यवान योगदान दिए हैं।

- सुन्दर धार्मिक इमारतों के चित्र एकत्रित करो।
- प्रत्येक त्यौहार को मनाने के कारण तथा उसका अर्थ एकत्रित करो और विविध धर्मों के त्यौहारों को मनाओ।
- विविध धर्मों की सूक्तियां एकत्रित करो और प्रत्येक दिन एक सूक्ति को कक्षा के ब्लैक बोर्ड (श्याम पट्ट) या स्कूल के नोटिस बोर्ड पर लगाओ।
- विभिन्न धर्मों के विज्ञान, कला, राजनीति, सामाजिक कार्य आदि क्षेत्रों के प्रसिद्ध भारतीयों के चित्र एकत्रित करो तथा जीवनी लिखो।
- अपने धर्म की विविध धार्मिक इमारतों का दौरा करो और उनकी योजना, सजावट तथा पूजा करने के रूपों का अध्ययन करो।

India has been the home of many religions, each one has made valuable contributions to the development of India.

- Collect pictures of beautiful religious buildings.
- Collect the story and meaning behind each festival and celebrate the festivals of different religions.
- Collect quotations from different religions and write one on the class black-board or school notice board each day.
- Collect pictures and write the story of famous Indians in the field fo Science, Art, Politics, Social work, etc. who belong to different religions.
- Visit the various religious buildings of your region. Study the plan, decorations, and forms of worship.

17

18

19

22

21

23

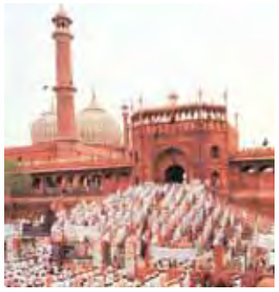

20

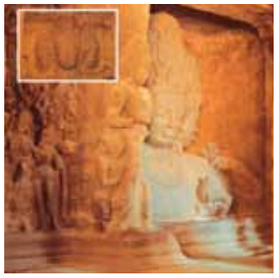

24

विमान
Vimana

यह संरचना मूलत: स्थल योजना में चौकोर अथवा आयताकार होती है और यह पिरामिडीय ढांचे की तरह ऊपर को कम होता जाता है। इसे कई मंजिलों तक ऊंचा बनाया जाता है।

'शास्त्रों के अनुसार' विमान विविध आनुपातिक परिमाणों के साथ निर्मित मंदिर का नाम है।

This is a structure which is basically square or rectangular in ground plan. It rises several stories high and is pyramidal in shape.

Vimana is the name of temple built according to the proportionate measurements laid down in the *Shastras.*

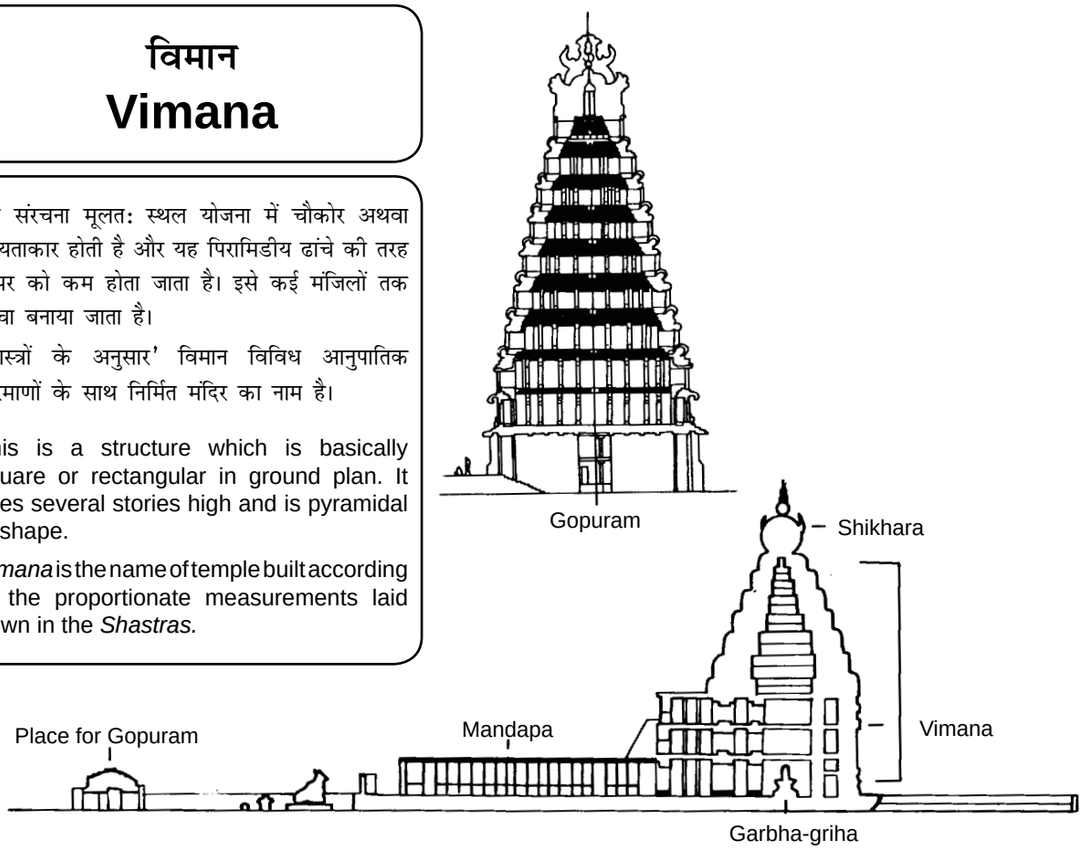

PLAN OF TEMPLE

गोपुरम
Gopuram

'गोपुरम' दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश द्वार है। गोपुरम शब्द का उद्भव वैदिक काल के ग्रामों के गो-द्वार से हुआ और धीरे-धीरे यही गो-द्वार मंदिरों के विशाल प्रवेश द्वार बन गये, जिन्हें यात्रीगण बहुत दूर से भी देख सकते थे।

'गोपुरम' की भवन-योजना आयताकार होती है। गोपुरम की पिरामिडीय बनावट को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसकी सबसे नीचे की दो मंज़िलें ऊंचाई में बराबर बनाई जाती हैं।

Gopuram is a South Indian temple gateway. *Gopuram* derived its name from the 'cow-gate' of the villages of vedic period and subsequently became the monumental entrance gate to the temple and can be seen from a distance.

The *gopuram* is oblong in plan. The two lowermost stories are vertical in order to give a stable foundation for the pyramidal structure of the *gopuram.*

मंडप
Mandapa

'मंडप' सामान्यत: एक स्तंभयुक्त सभागृह अथवा ड्योढ़ी (द्वारा मंडप) होता है, जहां पर भक्तगण मंदिर की देवी, देव अथवा ईश्वरीय प्रतीक को अपना भक्ति भाव समर्पित करने से पहले एकत्रित होते हैं।

'मंडप' को सीधे गर्भ-गृह से भी जोड़ा जाता है। इस मंडप को पूर्ण रूप से या इसका कुछ भाग बंद किया जा सकता है अथवा मंडप को बिना दीवारों के भी बनाया जा सकता है।

कुछ मंदिरों में उदाहरणार्थ–मामल्लापुरम में, समुद्र तट पर स्थित मंदिर के मंडप तथा कांचीपुरम स्थित कैलाशनाथ मंदिर में मंडप मुख्य तीर्थ मंदिर से अलग बने हुए हैं।

Mandapa is usually a pillared hall or a porch—like area where devotees assemble before moving into the sanctum sanctorum of the temple.

A *mandapa* may be attached to the *garbha-griha* directly. The structure may be entirely or partially enclosed or without walls.

In some temples like the Shore Temple at Mamallapuram and the Kailasanatha temple, the *mandapa* is separate from the main shrine.

शिखर
Shikhara

सामान्यतया, मंदिर शब्द सुनते ही हमारे समक्ष गर्भ-गृह की चोटी पर बनी ऊंची अधि-रचना आ जाती है। 'शिखर' का शाब्दिक अर्थ 'पर्वत की चोटी' है, जो विशेष रूप से भारतीय मंदिर की अधि-रचना का पर्याय है।

विद्वानों का मत है कि 'शिखर' का अर्थ 'सिर' है और इसे 'शिखा' शब्द से ग्रहण किया गया है, जिसका अर्थ सिर के पीछे एक रूढ़िवादी हिन्दू द्वारा रखे जाने वाला बालों का गुच्छा है।

Generally, the accepted form of the temple is the high superstructure built on top of the *garbha-griha.*

Shikhara which means 'mountain peak' is the superstructure of the Indian temple. Scholars mention that the Shikhara meaning 'head' has been derived from 'Shikha', the tuft of hair worn by an orthodox Hindu on the crown of the head.

गर्भ–गृह
Garbha-Griha

गर्भ-गृह, निश्चित रूप से एक गहरा अंधेरा कक्ष होता है, जहां मंदिर की प्रमुख प्रतिमा को स्थापित किया जाता है। यह कक्ष वास्तुकला योजना में चौकोर अथवा कभी-कभी आयताकार होता है और कभी-कभार बहुभुजी अथवा गोलाकार होता है।

अपने नाम के अनुसार यह इमारत 'गर्भ' की भांति मानी जाती है तथा अनन्त काल से गर्भ-गह का यह स्वरूप अपरिवर्तित है। नाम तथा रूप से भी गर्भ-गृह प्राथमिक महत्व का स्थान है। यह वह स्थान है जहाँ भक्तगण अपने सांसारिक विचारों को थोड़ी देर के लिए भूल कर ईश्वर से समागम करते हैं।

The Garbha-Griha is essentially a small dark chamber where the main deity of the temple is established. It is square in plan or very rarely rectangular or polygonal or circular.

It is believed to be the "womb" and has remained unchanged throughout the ages. By its name and form, the *garbha-griha* is a place of primary significance. This is the place towards which the devotee proceeds momentarily leaving behind all worldly thoughts to be in communion with the supreme being.

चांसेल
Chancel

चर्च में मुख्य वेदी के पास के स्थान को चांसेल कहते हैं। यह पादरियों एवं वृन्द गान समूह के लिए नियत रहता है। अमूमन यह स्थान जाली के माध्यम से शेष भवनों से विभक्त किया जाता है।

In a church near the altar, the space which is reserved for the clergy and choir, set off from the nave steps, and occasionally screened off is known as Chancel.

वेदी खंड
Altarpiece

चर्च की मुख्य वेदी की पिछली तरफ किंतु कुछ ऊपर वेदी खंड होता है। यह या तो चित्रित होता है और या फिर उत्कीर्ण। इस का चूलदार पंखों वाला एक फलक होता है या तीन फलक। इसके दोनों पार्श्व चित्रित होते हैं।

An Altarpiece is a painted or carved work of art placed behind and above the altar of a church. It may be a single panel, three panels or polytych having hinged wings. Both its sides are usually painted.

प्रार्थनालय
Chapel

चर्च के उस कक्ष को प्रार्थनालय कहते हैं जिसमें संत को समर्पित वेदी रहती है।

The Chapel is a compartment in a church containing an altar dedicated to a saint.

बेलफ्राई
Belfry

चर्च के घंटे वाली मीर को बेलफ्राई कहते हैं।

The Belfry is a tower for the church bell.

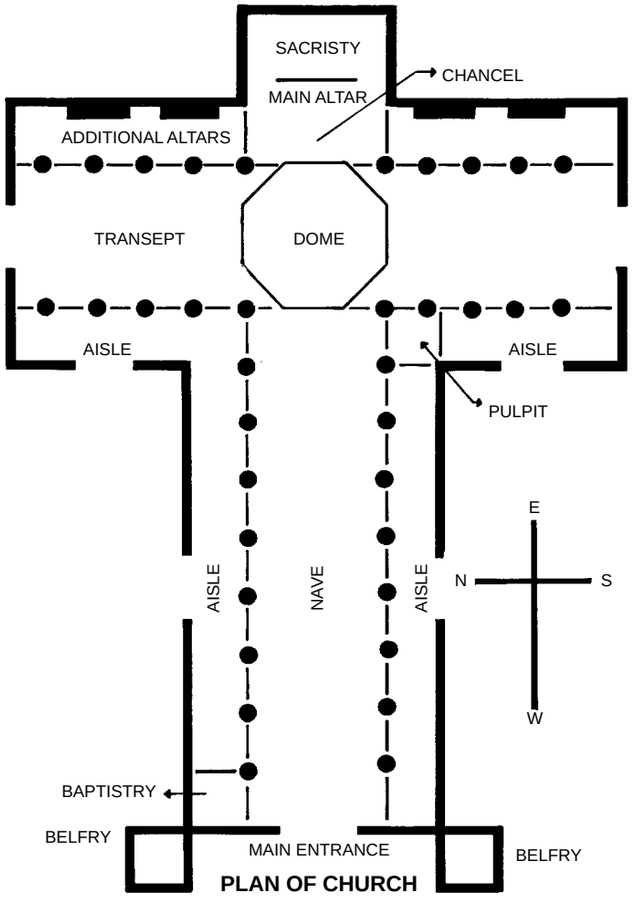

PLAN OF CHURCH

गलियारा
Aisle

चर्च के मध्य एवं अनुप्रस्थ भाग के बराबर वाले भाग को गलियारा या पार्श्ववीथी कहते हैं। यह स्तंभों के माध्यम से इनसे अलग रहता है।

As Aisle is a section of a church alongside the nave and transept and is separated from these by rows of columns.

ट्रांसेट
Transept

क्रूसाकार चर्च में मुख्य आले तथा चांसेल के मध्य भाग को ट्रांसेप्ट कहते हैं। इसका डिजाइन बहुत ही सुव्यवस्थित होता है।

The Transept is a well-designed part in a cross-shaped church. In the design, it is an arm forming a right angle with the nave, usually inserted between the nave and the chancel.

सैकरिस्टि
Sacristy

चांसेल के समीप के कक्ष को सैकरिस्टि कहते हैं। यहां पादरी के पवित्र परिधान रखे रहते हैं तथा पादरी यहीं पवित्र परिधनों को धारण करते हैं।

The Sacristy is a room near the chancel where sacred vestments are kept. The priests wear these ceremonial robes in this room.

बसिलिका
Basilica

रोमन काल में बसिलिका से तात्पर्य एक विशाल सम्मेलन कक्ष से होता है। प्रारंभिक ईसाईयों द्वारा अपने चर्चों के लिए भी यह शब्द इस्तेमाल किया जाता था। विशेष दर्जा रखने वाले महत्वपूर्ण कैथोलिक चर्चों के लिए भी यह शब्द प्रयोग में लाया जाता है।

In the Roman period, the word refers to the function of the building—a large meeting hall—rather than to its form which may vary according to its use. The term was used by the early Christian to refer to their churches. The term is also used for important Catholic churches enjoying special status.

दीक्षा कक्ष
Baptistery

चर्च का कोई भाग या उसके साथ का कोई भवन दीक्षा कक्ष हो सकता है। प्रायः यह वृत्ताकार या अष्टकोणीय होता है। इसमें दीक्षा की शपथ दी जाती है। यहां दीक्षा-स्थल तथा पत्थर या धातु का बना एक पात्र होता है जिसमें धार्मिक कार्यों हेतु पवित्र जल रखा जाता है।

The Baptistery may be a building or part of a church. Usually this place is round or octagonal in shape. The sacrament of baptism is administered here. It contains a baptismal font, a receptacle of stone or metal that holds the water for the rite.

लिवान
Liwan

लिवान मस्जिद का स्तंभों वाला कमरा होता है।

The pillared cloister of a mosque is known as Liwan.

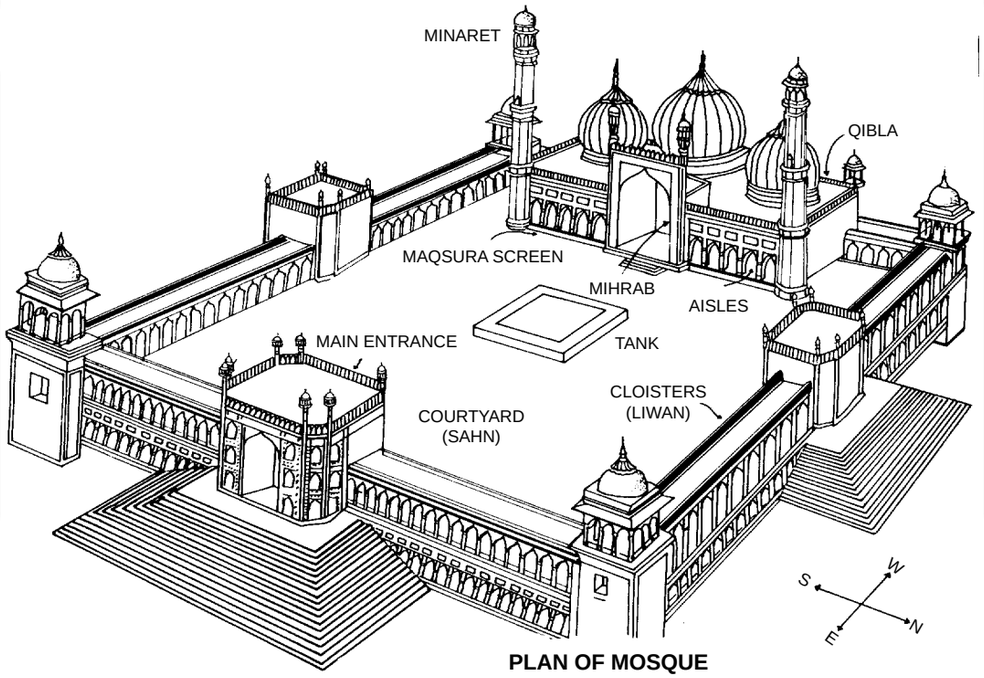

PLAN OF MOSQUE

मक़सुरा
Maqsura

मस्जिद के किबला के आखिरी सिरे को मक़सुरा कहते हैं। रेलिंग के मार्फत यह हिस्सा अलग रहता है तथा इसका उपयोग केवल शाही व्यक्ति या मौलवी ही कर सकता है।

Maqsura is a railed off area at the qibla (wall) end of a mosque. It is reserved for the chiefs of the community or rulers.

मेहराब
Mihrab

मेहराब, किबला दीवार में बने आले को कहते हैं। अमूमन यह आदमकद होता है और मक्का की सही दिशा दिखाता है।

Mihrab is a niche or alcove, usually the height of a man. It is set into the qibla wall of a prayer hall and indicates the precise direction of Mecca.

सहन
Sahn

मस्जिद के प्रार्थना स्थान के सामने की खुली जगह (आंगन) को सहन कहते हैं। यहीं पर सभी लोग नमाज पढ़ने के लिए इकट्ठे होते हैं।

Sahn is the courtyard of a mosque where the faithful assemble for prayers.

किबला
Qibla

मस्जिद या प्रार्थना-स्थल की काबा (मक्का) की तरफ की दीवार को किबला कहते हैं। इसी कारण क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थिति की वजह से किबला की दिशा हमेशा एक-दूसरे से अलग रहती है।

Qibla is the wall of the mosque or prayer hall oriented towards the Kaaba of Mecca. It is therefore, varying in direction according to the geographical region.

Illustrated Picture Cards

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
1

1. गुफाएं, बाह्य दृश्य, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

हमारी सांस्कृतिक विरासत की कहानी लगभग 10,000 वर्ष पुरानी है। सर्वाधिक प्राचीन ऐतिहासिक काल को पूर्व-ऐतिहासिक काल अथवा पाषाण युग के नाम से जाना जाता है। इस काल में लोगों ने अति जल-वृष्टि आदि प्राकृतिक विपदाओं से बचाव के लिए गुफाओं में आश्रय लिया था। वे शिकार और फल-फूल एकत्रित कर जीवन यापन करते थे। उन्होंने पत्थरों, लकड़ी तथा हड्डियों से साधारण औजार भी बना लिए थे। इस चित्र में दृष्टिगोचर गुफाएं भोपाल शहर के दक्षिणी दिशा में वहां से कोई पचास किलोमीटर दूर भीमबेटका में स्थित है। इन गुफाओं में पत्थरों को तराश कर बनाए गए औजार मिले हैं तथा इनकी दीवारें शिकार, संगीत एवं नृत्य आदि के दृश्यों से प्रचुर रूप से चित्रित हैं। इन्हीं सब के कारण इन गुफाओं को, इनमें रह चुके लोगों के दैनिक जीवन की जानकारी देने वाला भंडार गृह माना जाता है।

1. Cave Dwellings, Exterior View, Bhimbetka, Madhya Pradesh

The story of our cultural heritage goes back about 10,000 years. The earliest historical period is referred to as the Pre-historic period of Stone age. During this period, people found shelter in natural caves which protected them from rain and the natural elements. They lived by hunting and gathering fruits and plants. They also prepared simple tools out of stones, wood and bone. The caves shown in the picture are situated at Bhimbetka, about 50 kms. south of Bhopal city. Chiselled stone tools were found in these caves. The walls are profusely illustrated with hunting, music and dance scenes and are a storehouse of information of the daily life of the people who inhabited these caves.

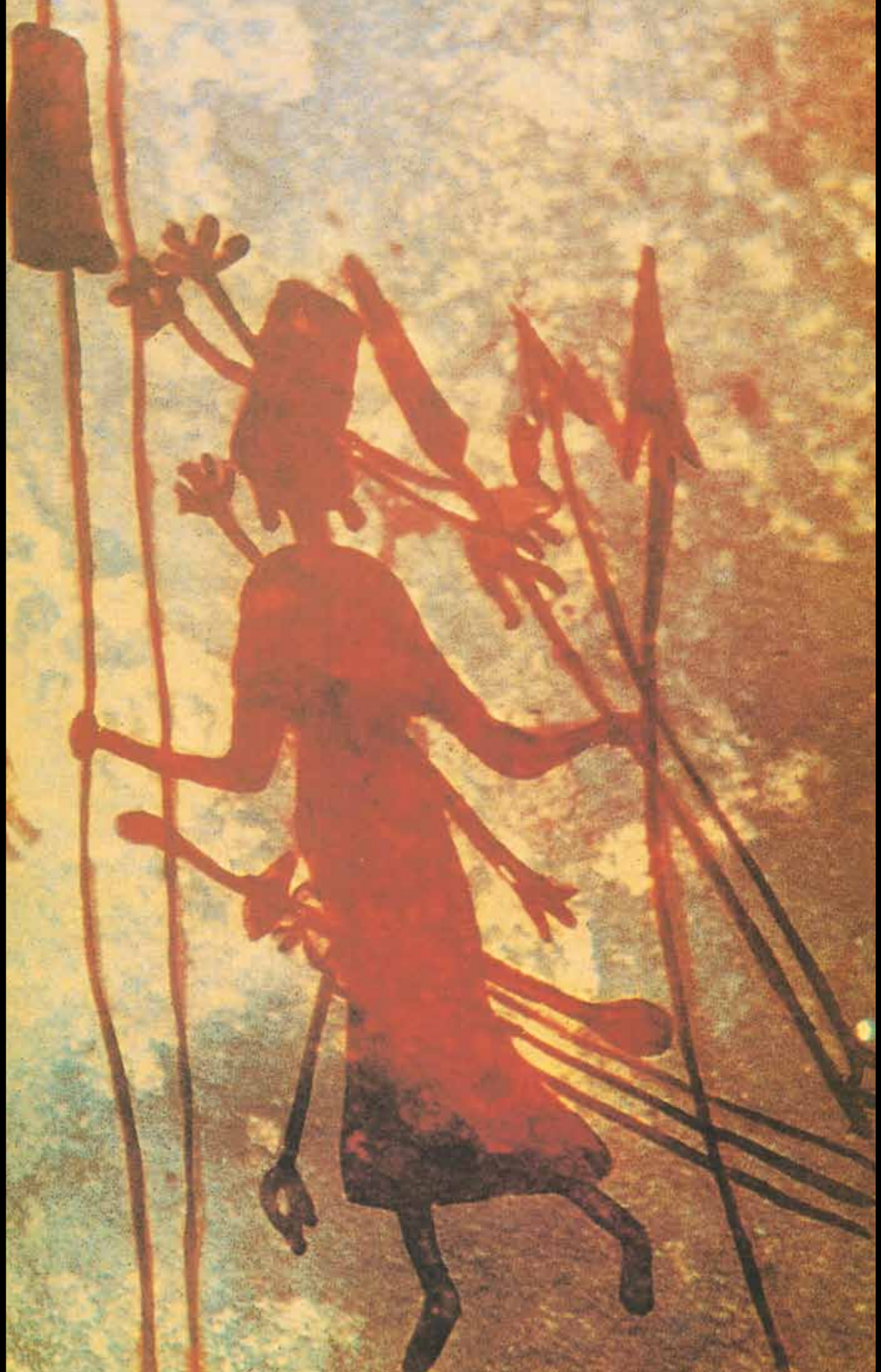

2. भित्तिचित्र, भीमबेटका, मध्य प्रदेश

भीमबेटका की प्राकृतिक पहाड़ी गुफाओं में जिन लोगों ने आश्रय लिया था, उन्होंने गुफाओं की दीवारों की भित्तिचित्रों से सजाया। इन भित्तिचित्रों में इस्तेमाल किए गए रंग इस क्षेत्र में मिलने वाले खनिज पदार्थों एवं पत्थरों से प्राप्त किए गए थे। ये भित्तिचित्र हमें इस बात की जानकारी प्रदान करते हैं कि गुफा-निवासी किस प्रकार के औजार उपयोग में लाते थे और किस प्रकार शिकार करते थे। यह भी एक आश्चर्यजनक बात है कि लगभग 10,000 वर्ष पूर्व मानव ने ऐसे सुन्दर चित्रों की रचना की जो उनके दैनिक जीवन के विभिन्न पक्षों को दर्शाते हैं।

2. Wall Painting, Bhimbetka, Madhya Pradesh

The people who lived in natural rock shelters at Bhimbetka decorated the walls of the caves with paintings. The colours for the paintings were obtained from minerals and stones found in that area. This painting gives us some idea of the weapons they used and how they hunted. Approximately 10,000 years ago, man created on the walls of caves, vivid scenes depicting his daily life.

3. नगर की योजना, सिन्धु सभ्यता, लोथल, गुजरात

करीब 5000 वर्ष पूर्व, सिन्धु नदी के किनारे एक महत्वपूर्ण सभ्यता विकसित हुई थी। बाद में की गई खुदाई से इस तथ्य का भी पता चलता है कि इस सभ्यता से सम्बन्धित उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र के कई स्थलों में भी इसी प्रकार की नगर-योजना विद्यमान थी। मानवीय सभ्यता के प्रारंभिक काल में इस प्रकार के सुनियोजित नगरों की रचना सिंधु सभ्यता की एक दुर्लभ विशेषता है। नगर-योजना में मुख्य मार्गों के साथ उप-मार्ग जुड़े थे एवं आवासीय क्षेत्र अलग थे। सभी मकान, यहां तक कि दो मंजिल ऊंचे मकान भी, ईंट से बनाए जाते थे।

गोदी-बाड़ा, सिंधु सभ्यता, लोथल, गुजरात

आंतरिक चित्र गोदी-बाड़े का है। यह माना जाता है कि सिंधु सभ्यता के दौरान लोथल एक बंदरगाह था और इस बात के प्रमाण भी मिलते हैं कि भारत और मेसोपोटामिया के बीच व्यापारिक संबंध थे। जलपोत काष्ठ से बनते थे और संभवत: नाविक अपनी यात्राओं के समय चर्म वस्त्र पहनते थे।

3. Plan of the City, Indus Civilization, Lothal, Gujarat

About 5000 years ago, a remarkable civilization flourished on the banks of the river Indus. Later excavations have proved the existence of similar townships in Rajasthan, Uttar Pradesh, Gujarat and Maharashtra. One of the rare features of this civilization is the construction of well planned cities at so early a date in the history of mankind. Main roads with cross-lanes and separate residential areas were built. The houses. even two storeys high were made of brick.

Dockyard, Indus Civilization, Lothal, Gujarat

The picture of the dockyard is shown in the inset. It is believed that Lothal was the seaport of the Indus civilization and there is evidence that trading contacts were made between India and Mesopotamia. The ships were built of wood and perhaps leather garments were worn for sea travel.

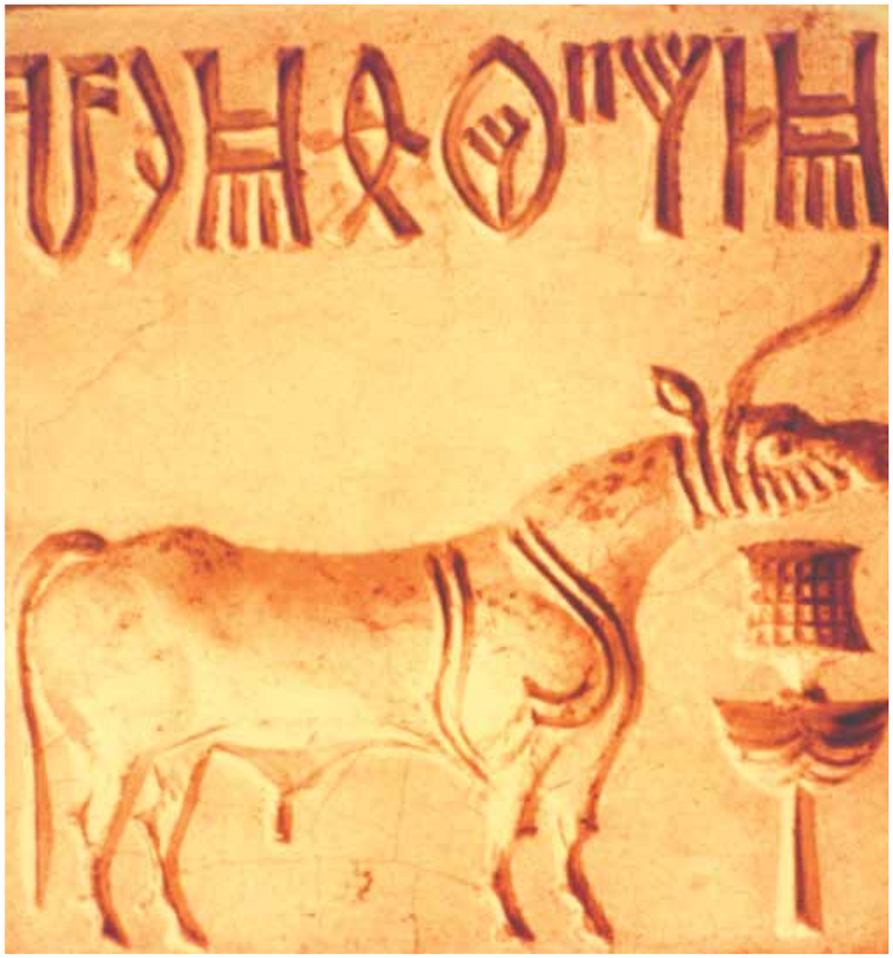

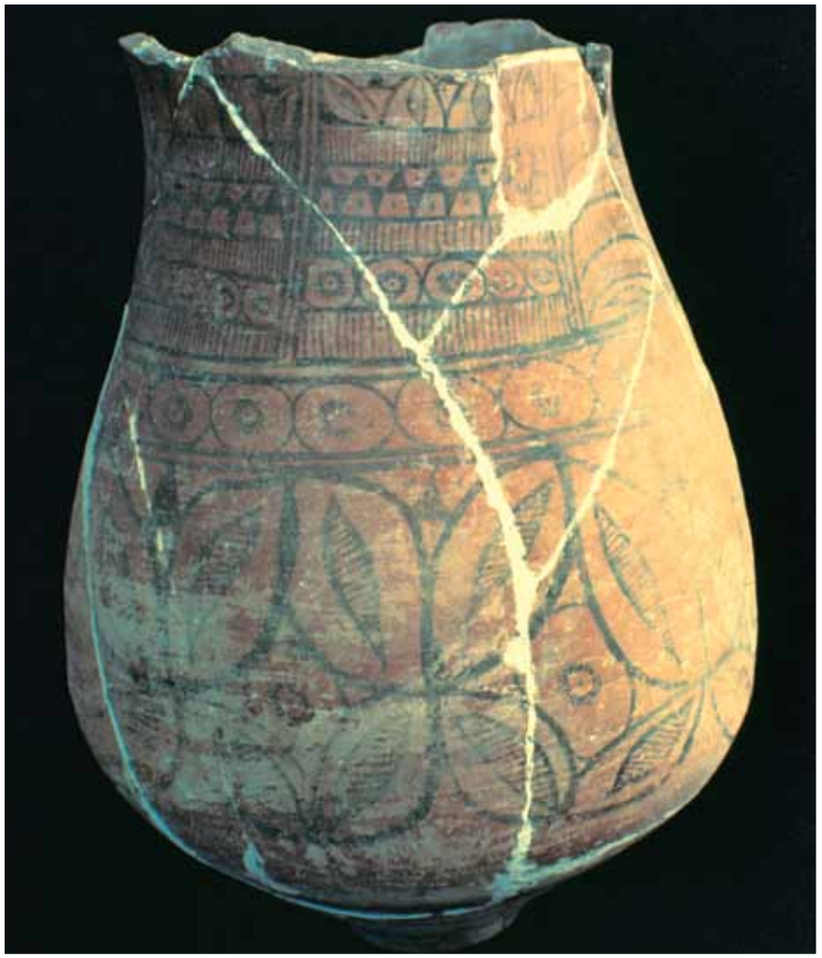

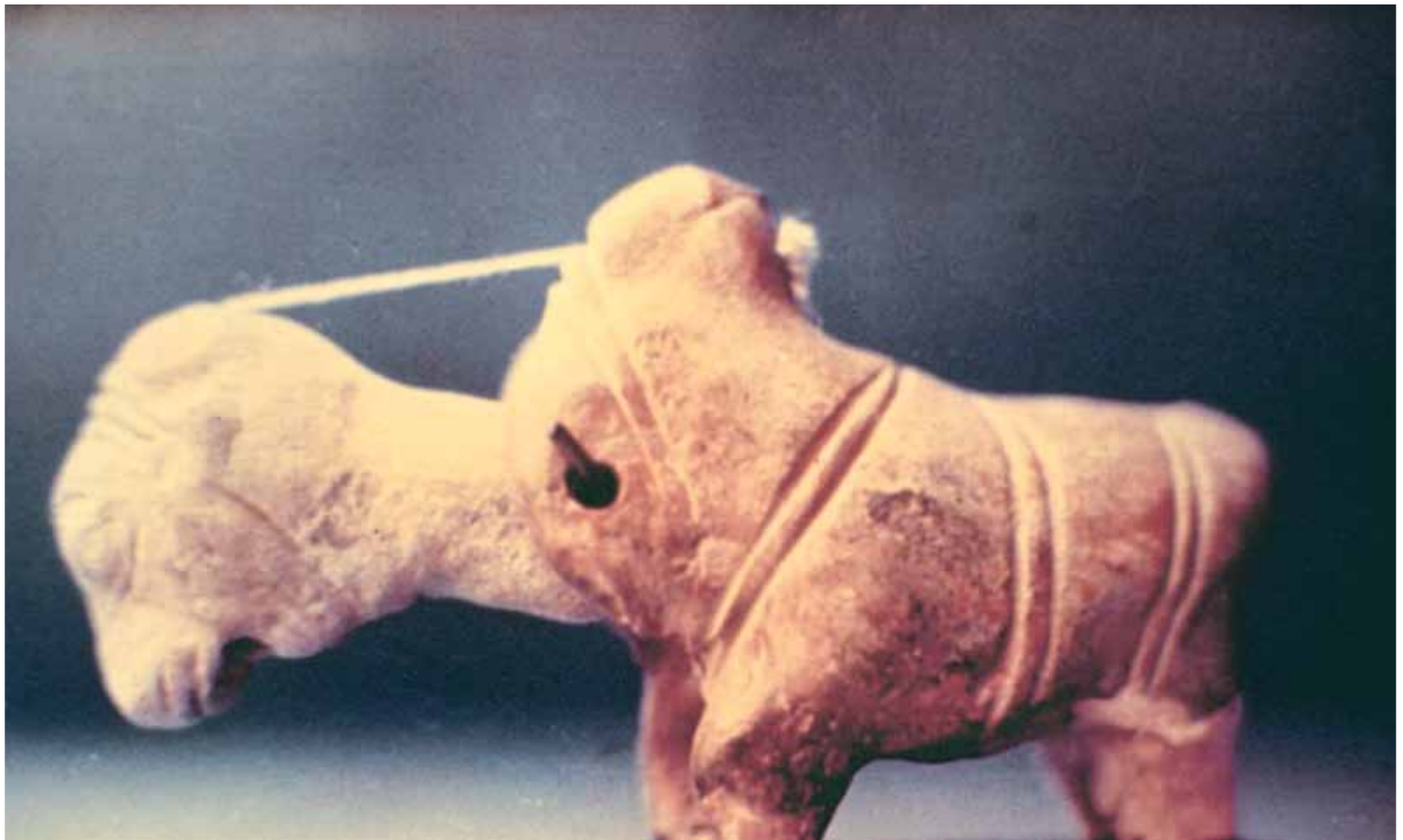

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
1

4. मुहर, एकश्रृंगी, सिंधु, सभ्यता, हड़प्पा, पाकिस्तान

सिंधु सभ्यता के स्थानों पर की गई खुदाई के दौरान 2000 से भी ज्यादा मुहरें प्राप्त हुई हैं। यह मुहरें चौरस और आयताकार हैं। इन्हें नर्म पत्थर से बनाया गया है तथा इन पर चित्र तथा लिपि उत्कीर्ण हैं। उत्कीर्ण चित्रों में सांड, बकरा, भैंस, शेर तथा हाथी आदि पशुओं के चित्र हैं एवं लेखों में दस से बीस प्रतीक हैं। ये मुहरें, वर्तमान में व्यवहार में लाई जाने वाली मुहरों जैसी ही हैं तथा नर्म मिट्टी की पट्टी पर दबा कर अंकित की जाती थीं। इन्हें संभवत: व्यापारिक कार्यों तथा संपत्ति पर स्वामित्व दर्शाने हेतु इस्तेमाल किया जाता होगा। प्रस्तुत चित्र में आप एक श्रृंगी पौराणिक पशु को देख सकते हैं। संभवत: यह किसी व्यापारिक घराने का व्यापारिक प्रतीक रहा होगा।

चित्रित पात्र, सिंधु सभ्यता, लोथल, गुजरात

प्रस्तुत चित्र में दृष्टिगोचर पात्र चाक पर बना है तथा सिंधु सभ्यता के दौरान इस कला की विकसित तकनीक की जानकारी देता है। यह पात्र सुखाने के पश्चात् पकाया गया था तथा फिर इसकी लाल सतह पर काले रंग से पत्तियों, पक्षियों तथा जानवरों की आकृतियां चित्रित की गई थीं। यह पात्र काफी बड़ा है। संभवत: इसका इस्तेमाल खाद्यान्न या जल को रखने के लिए किया जाता रहा होगा।

मिट्टी के खिलौने, सिंधु सभ्यता, मोहन-जो-दड़ो, पाकिस्तान

सिंधु घाटी की खुदाई के दौरान मानव व पशुओं के लघु रूप वाले सैकड़ों मिट्टी के खिलौने प्राप्त हुए थे। इन खोजों से ज्ञात होता है सिंधु घाटी के निवासियों का प्रकृति से गहरा संबंध था। चित्र में दर्शाया खिलौना मिट्टी से बना है। इसका मस्तक अलग से बना कर एक धागे से जोड़ा गया था जिससे धागे के खींचने पर वह हरकत करता है। नन्हें बच्चों के लिए एक दिलचस्प खिलौना है।

4. Seal, Unicorn, Indus Civilization, Harappa, Pakistan

More than 2000 seals have been discovered from the sites of the Indus civilization.The seals were of square or oblong shape, usually made of soft stone and had engraved pictures and a script. Generally the seals depicted pictures of animals like bull, goat, buffalo, tiger and elephant, while the inscriptions contained not more than ten to twenty symbols. These seals were more or less like modern seals and were pressed on soft clay tablets. They probably have been used for commercial purposes and to mark property or possessions. In this picture, you can see unicorn — a one horned mythical animal, perhaps the emblem of a trade merchant or family.

Painted Pot, Indus Civilization, Lothal, Gujarat

The pot shown in this picture was made on the wheel and provides information of the advanced technology of the period of the Indus Civilization. The red pot was dried, baked and designs of leaves, birds and animals were painted in black on its red surface. The pot is large and may have been used for storage of water or grain.

Toy, Terracotta, Indus Civilization, Mohen-Jo-Daro, Pakistan

During excavations in the Indus Valley, hundreds of tiny clay toys which were miniature forms of human beings and animals were found. These discoveries show the close association of the Indus people with nature. The toy shown in the picture has been made of clay. The head has been made separately and attached to a string, which when pulled makes it move, thus making an interesting toy for young children.

5. नृत्यांगना, कांस्य प्रतिमा, सिंधु सभ्यता, मोहन-जो-दड़ो, पाकिस्तान

हड़प्पा तथा मोहन-जो-दड़ो में की गई खुदाई से प्राप्त वस्तुओं से यहां के निवासियों की कलात्मक प्रतिभा का भी पता चलता है। उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियों में उत्कीर्ण मुहरें तथा मानव-आकृतियां हैं। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण नृत्यांगना की प्रतिमा है। इस कांस्य प्रतिमा को नृत्यांगना नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि उसके खड़े होने की मुद्रा भव्य है। उसने एक हाथ में चूड़ियाँ पहन रखी हैं तथा दूसरे में एक कटोरा है। यह तथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हजारों वर्ष पहले के कलाकार धातु-विज्ञान से परिचित थे और धातु को ढाल कर कलात्मक वस्तुएं बना सकते थे।

पुजारी, मिट्टी की मूर्ति, सिंधु सभ्यता, हड़प्पा, पाकिस्तान

शाल धारण किए हुए इस पुरुष की प्रतिमा को "पुजारी" भी कहा जाता है। संभवत: इसका कारण यह है कि यह किसी ऐसे पुजारी से मेल खाती है जो ध्यानावस्था में बैठा हो और उसके नेत्र आधे मुंदे हों। यह मूर्ति उस काल की वेशभूषा, कपड़ों के डिजाइन और केश विन्यास के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

5. Dancing Girl, Bronze, Indus Civilization, Mohen-Jo-Daro, Pakistan

The excavations carried out at Mohen-Jo-Daro and Harappa reveal a great deal about the artistic talents of the people of this civilization. Excavations have proved that they were artistically inclined, their most notable achievements being their seals, engravings and human figurines. One of the most striking of these is perhaps the 'Dancing girl'. This bronze figure is referred to as the Dancing girl because she is standing in a graceful pose. She is wearing bangles on one arm and holds a bowl in the other hand. It is remarkable that many centuries ago artists knew the science of metallurgy, casting and could create such works of art.

Priest, Clay, Indus Civilization, Harappa, Pakistan

This figure of a man wearing a shawl has often been called 'The Priest'. It is suggested that the figure resembles a priest because his eyes are half closed in meditation. This sculpture provides information on the costume, textile designing and hair style of that period.

6. चौरी वाहक, मौर्य काल, पटना, बिहार

यह सुन्दर मूर्ति शिल्प मौर्य वंश के शासक अशोक महान के शासन काल की है। सम्राट अशोक भारत के एक महान राजा तथा बौद्ध मत के प्रचारक थे। यह "चौरी" (चंवर) हाथ में लिए हुए एक स्त्री की सुन्दर मूर्ति है। चौरी राजसी परिवार तथा उच्च पद के लोगों को हवा करने के लिए उपयोग में लाई जाती थी एवं शान की प्रतीक थी। यह मूर्ति पटना संग्रहालय में रखी हुई है। सम्राट अशोक के शासन काल में ऐसी बहुत-सी उच्चकोटि की पॉलिश वाली पत्थर की मूर्तियां निर्मित हुई थीं, जो आज भी शीशे की तरह चमकती हैं। आभूषणों से हमें इस बात की जानकारी मिलती है कि उस समय की स्त्रियां किस प्रकार के आभूषण पहनती थीं।

6. Chauri Bearer, Mauryan Dynasty, Patna, Bihar

This is a beautiful sculpture which dates back to the reign of Emperor Ashoka of the Mauryan dynasty. Ashoka was India's most illustrious emperor and also remembered as a great proponent of Buddhism. Here the woman is seen carrying a *chauri* (fly whisk) which was used to fan members of the royal family or people belonging to high rank. Many such beautiful stone sculptures dating to the reign of Ashoka have been found. One of the most striking features of these sculptures is the highly polished exterior which gives it a glass like shine. This stone sculpture is from Didarganj and is now kept in the Patna Museum, Bihar.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
1

7. सिंह प्रतीक, मौर्य काल, सारनाथ, उत्तर प्रदेश

सम्राट अशोक ने अपने पूरे राज्य में बहुत से "स्तंभ" निर्मित करवाए थे। प्रत्येक स्तंभ के ऊपर बौद्धमत का एक प्रतीक है तथा उन पर सम्राट अशोक के नियम एवं कानून लिपिबद्ध हैं ताकि लोग उन्हें जान सके। सम्राट अशोक का यह सिंह प्रतीक उत्तर प्रदेश स्थित सारनाथ में पाया गया और इसे भारतीय गणतंत्र के प्रतीक चिन्ह के रूप में चुना गया। आप इस सिंह प्रतीक को सभी भारतीय सिक्कों, रुपयों, सरकारी मुहरों और अन्य सरकारी कागजातों पर पाएंगे। इसमें चार सिंह बने हुए हैं जो प्रतीकात्मक रूप में हमारे देश की चार दिशाओं अर्थात् उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की रक्षा करते हैं। सिंहों के नीचे, बौद्ध प्रतीक-धर्मचक्र है जो धर्मपरायणता और प्रगति का चिन्ह है। इसके नीचे बैल, बल तथा सदाशयता का एवं हाथी, घोड़ा हिरण, शक्ति, गति और सुंदरता के प्रतीक रूप हैं।

7. Lion Capitol, Mauryan Dynasty, Sarnath, Uttar Pradesh

Emperor Ashoka was one of the greatest kings of India and a great propagator of Buddhism. During his reign, Ashoka set up many 'stambhas' or pillars which had inscriptions that tell us a great deal about his rule. Each pillar had an emblem on top as its capitol.

The lion capitol of emperor Ashoka was found at Sarnath in Uttar Pradesh and was chosen as the symbol of the Indian Republic. You will find this lion capitol on all Indian coins, notes, government stamps and other official documents. It has four lions facing the four cardinal directions—north, south, east and west. Below the lions is the Buddhist symbol of Dharmachakra known as the wheel of righteousness. The bull symbol denotes strength and goodness, the elephant, the horse and the deer are symbols of power, speed and grace.

35

8. महाकपि जातक, भरहुत स्तूप, मध्य प्रदेश

महाकपि जातक को दर्शाने वाला भरहुत फलक भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म के सद्कार्यों के बारे में जातक कथा को साक्षात् करता है। इस चित्र में दर्शित ऐसी ही एक कथा में एक शिकारी बंदरों का शिकार करने आता है। बुद्ध स्वयं को नदी पर दो पेड़ों के बीच एक पुल के रूप में परिवर्तित कर लेते हैं तथा बंदरों को शिकारी से बचने में सहायता करते हैं। बुद्ध की पीठ बुरी तरह घायल हो गई है, पर उन्होंने दूसरों के लिए कष्ट सहन कर अपनी महानता दिखाई। पेड़ के नीचे आप शिकारी को दयालुता एवं परहित की शिक्षा देते हुए भगवान बुद्ध को देख सकते हैं।

8. Mahakapi Jataka, Bharhut Stupa, Madhya Pradesh

Mahakapi Jataka represented in the Bharhut medallion depicts a Jataka story of one of the noble deeds of Buddha's previous births. The story depicted in this picture tells us of a hunter who has come to the forest to trap monkeys. The Buddha, out of his compassion, transforms himself into a human bridge between the two trees across the river so that the monkeys can escape from the hunter's clutches. Even though his back was badly hurt by this gesture, the Buddha showed his greatness by sacrificing himself for the benefit of others. Below the tree is the Buddha telling the hunter about the importance of being kind and helpful to all living beings.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
1

9. सांची स्तूप, सांची, मध्य प्रदेश

प्राचीन काल में निर्मित बौद्ध स्तूपों तथा धार्मिक-स्थलों का पयार्यवाची शब्द, सांची है। स्तूप एक ठोस अर्धवृत्ताकार भवन होता है, जिससे भगवान बुद्ध या बौद्ध संतों और अध्यापकों के भौतिक अवशेष रखे जाते हैं।

बौद्ध मत में स्तूप भगवान बुद्ध का प्रतीक भी माना जाता है। इसके तीन घेरे (रेलिंग) होते हैं। भूमि पर स्थिर घेरा पृथ्वी का प्रतीक माना जाता है, *मेधि घेरा* अंतरिक्ष का तथा *हर्मिका* स्वर्ग का। यहां दृष्टिगत हो रहे सांची के स्तूप क्रमांक-3 में एक ही छत्रावली है। गुंबद को पुनः बनाया गया था। इसमें भगवान बुद्ध की प्रारंभिक शिष्यों-सरिपुतासा और महमोगलनासा के अवशेष हैं।

अन्यों से सम्बद्ध स्तूप संख्या-3 के भू-स्तंभ उस समय के जीवन की दृश्यावली चित्रित करता है, जिसकी सहायता से तत्कालीन जीवन-शैली का अध्ययन किया जा सकता है। साँची से सम्बद्ध कुछ मूर्तियाँ संग्रहालय में संरक्षित हैं।

9. Sanchi Stupa, Sanchi, Madhya Pradesh

The name of Sanchi is synonymous with the prominent religious shrines and Buddhist *stupas* which were built in ancient times. The *stupa* is an hemispherical solid building containing some relics of Buddha or Buddhist saints and teachers.

In Buddhism, the *stupa* also symbolises the Lord Buddha. It has three railings—the one on the ground symbolises the Earth, — the *medhi* railings, the Space and the *harmika* symbolises the Heavens. Stupa No. 3 at Sanchi which is shown here, has only one *Chhatravali*, which contains the relics of Sariputasa and Mahamogalanasa, the foremost disciples of Buddha.

The ground rail pillars of the Stupa No. 3 alongwith others depict a panorama of the then contemporary life which helps in studying the life style of that period. Some of the sculptural remains of Sanchi are preserved at the site museum.

10. बुद्ध की प्रतिमा, गांधार क्षेत्र

ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में सिकंदर ने हिन्दुस्तान के एक हिस्से पर विजय प्राप्त की। वापस जाते हुए उसने विजित प्रदेश गांधार, जो वर्तमान पंजाब व पाकिस्तान के भाग थे, को अपने सेनाध्यक्ष को शासन के लिए सौंप दिया था। इस प्रकार हिंदुस्तान, यूनान और रोम के लोगों के संपर्क में आया और उन्होंने एक-दूसरे को प्रभावित किया। इस आपसी प्रभाव से कला की एक नई शैली "गांधार-शैली" विकसित हुई। इस चित्र में दृष्टिगोचर बौद्ध प्रतिमा इसी शैली की है। गांधार की बौद्ध मूर्तियों में हमें "टोगा" नामक रोमन वेशभूषा देखने को मिलती है। साथ ही मुखाकृति एवं केश सज्जा पर भी रोमन प्रभाव दिखाई देता है। इस प्रकार हम गांधार की मूर्तिकला में कला की हिंदू-यूनानी-रोमन शैलियों का परस्पर मिश्रण देखते हैं।

10. The Buddha, Gandhara Region

During the 3rd century B.C.E., Alexander the Great invaded the borders of India. He left the conquered areas called Gandhara comprising parts of modern Punjab and Pakistan under the command of his general. Thus India came into contact with people from Greece and Rome which influenced various facets of Indian life. Out of this confluence, a new form of art known as "Gandhara Art" was born. The Buddhist sculpture depicted in the picture is a product of the Gandhara form of art. In this Buddhist sculpture from Gandhara, notice the Roman dress called the 'toga'. The hair style and features of the face have a distinct Roman influence. In Gandhara sculptures, we see the inter-mingling of Indo-Greco-Roman art.

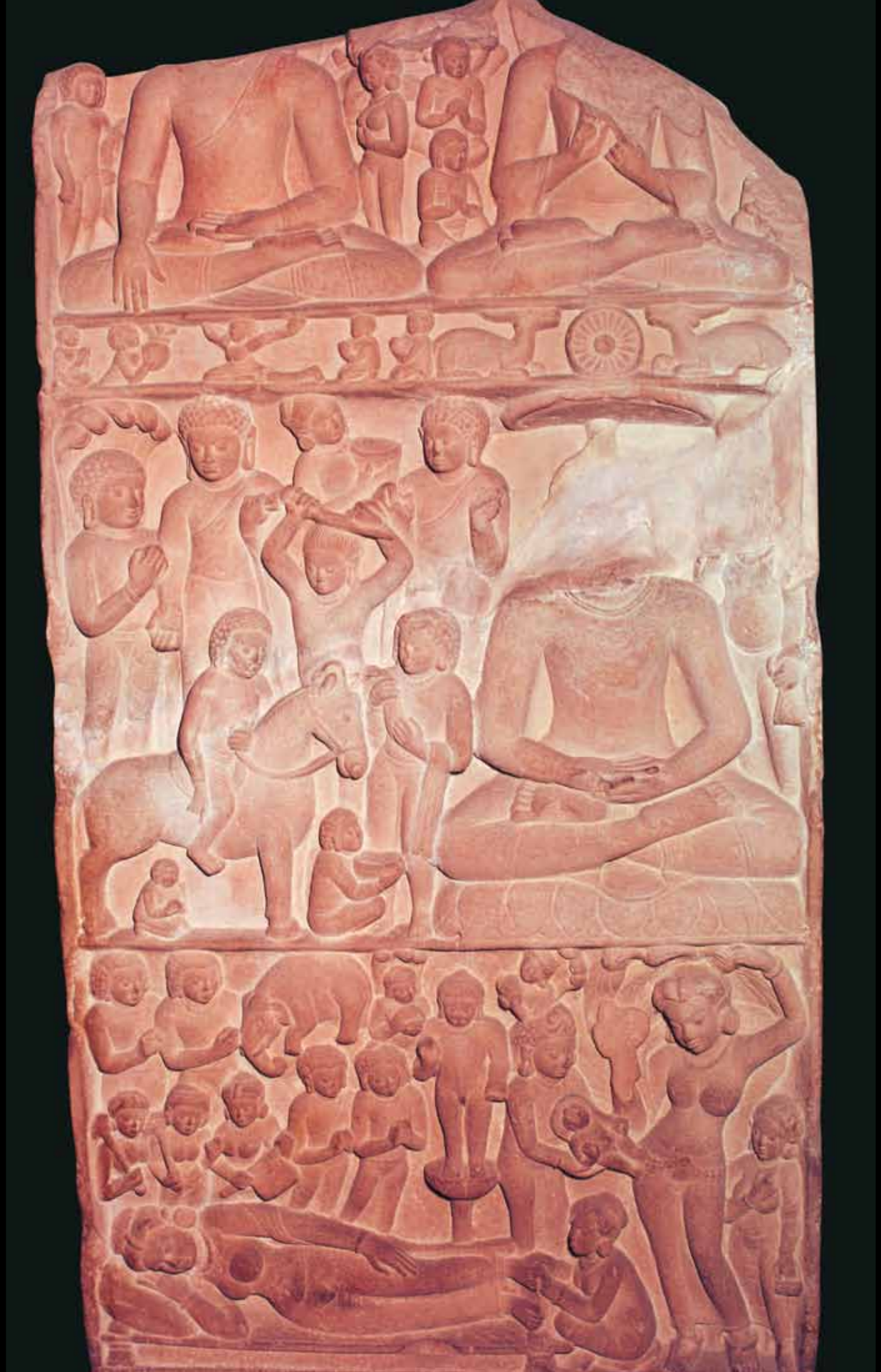

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
1

11. बुद्ध का जीवन, सारनाथ, उत्तर प्रदेश

पाषाण में निर्मित इस मूर्ति शिल्प में भगवान बुद्ध के जीवन की संपूर्ण कथा दर्शाई गई है। इसके निचले भाग में बुद्ध की माता माया की लेटी हुई मुद्रा में आकृति है। कहा जाता है कि उन्हें स्वप्न में श्वेत हाथी दिखाई दिया था। इसका अर्थ यह निकाला गया था कि उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति होगी जो सर्वत्र सुख-समृद्धि लाएगा। बालक बुद्ध को कमल के फूल पर खड़े हुए दिखाया गया है। इसके पश्चात् ऊपरी फलक में शिल्पकार ने भगवान बुद्ध के सन्यास ग्रहण को अंकित किया है। हम उन्हें अपने महल, संपत्ति तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं का परित्याग कर घोड़े पर सवार हो जाता देख सकते हैं। अंततः हम उन्हें "पद्मासन" की मुद्रा में ध्यान में बैठे हुए देख सकते हैं।

11. The life of Buddha, Sarnath, Uttar Pradesh

In this stone sculpture, the story of Buddha's life has been depicted. In the lower panel, the figure of Buddha's mother Maya is shown in a reclining pose. She is said to have a white elephant in her dream. The significance of the dream was that she would bear a son who would bring love and peace to all mankind. The child Buddha is shown standing on a lotus flower. In the upper panel, the sculptor depicts the scene of Buddha's renunciation. We can see him riding away on his horse, leaving behind his palace and wealth. Finally we see him sitting in meditation in the 'Padmasana' pose.

12. महावीर जैन की मूर्ति, तमिलनाडु

महावीर जैन भी भगवान बुद्ध की भांति ही महान् संत एवं शिक्षक थे। वे जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे। उनका जन्म एक राजसी परिवार में हुआ था, पर उन्होंने धार्मिक व्यक्ति एवं उपदेशक के रूप में जीवन-व्यतीत करने के लिए अपने महल तथा राजसी जीवन का परित्याग कर दिया था। उन्होंने यह खोजने के लिए ध्यान लगाया कि मानव मात्र किस प्रकार से प्रसन्न और शांतिपूर्वक जीवन जी सकता है।

उन्होंने अपने कपड़ों तक का परित्याग कर कठोर तपस्या की थी। फिर उन्होंने धर्म का प्रचार करने के लिए 12 वर्षों तक भ्रमण किया। वे मगध से लेकर बंगाल की पश्चिमी सीमाओं तक गए। 72 वर्ष की अवस्था में उन्होंने पटना के निकट पावापुरी में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

12. Image of Mahavir Jain, Tamil Nadu

Mahavir Jain was also a great saint and teacher like Buddha. He was the twenty-fourth of the Jain prophets and led a life of a religious mendicant. He was born in a princely family but left his palace and home to meditate and pray for the well being of mankind. He renounced his clothes and led a life of severe penance for two years and two months. Then he began his journey for twelve years propagating his religion, which took him across Magadh to the western boundaries of Bengal. He attained *mahaparinirvana* at the age of seventy two at Pavapuri near Patna.

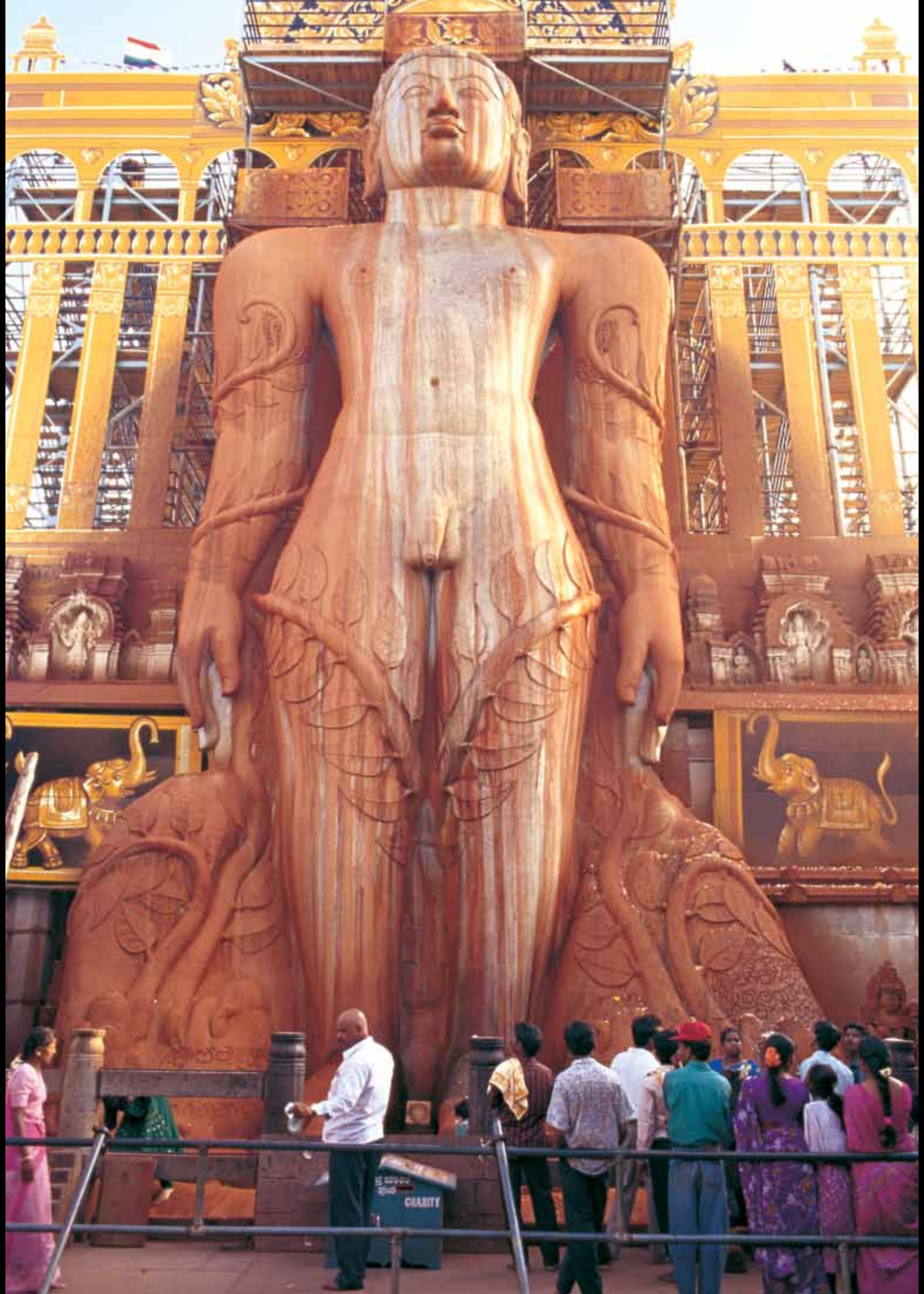
CHARITY

13. गोमतेश्वर, श्रवणबेलगोला, कर्नाटक

भारत में श्रवणबेलगोला जैन धर्म स्थानों में सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। यहीं भगवान बाहुबली (गोमतेश्वर) की 57 फीट ऊंची प्रतिमा भी है। इसे विश्व की सर्वाधिक बड़ी एकाश्म प्रतिमाओं में माना जाता है। गंग राजा-पंचमल्ल के शासनकाल में इसका निर्माण हुआ था। सन् 981 में अरस्तिनेमी नामक मूर्तिकार ने इसका निर्माण किया था तथा पंचमल्ल के एक सेनापति द्वारा स्थापित किया गया था। यह एक इकहरी चट्टान से निर्मित है तथा भगवान बाहुबली की ध्यानावस्था को साकार किया गया है। ऐसा माना है कि भगवान बाहुबली ने बिना हिले-डुले खड़े रह कर ऐसी कठोर तपस्या की थी कि उन्हें अपने शरीर के पौधों एवं लताओं द्वारा आच्छादित हो जाने का भी पता नहीं चला था।

हर 12 वर्षों के बाद होने वाले महामस्तकाभिषेक में सिक्कों, नारियल के दूध, दही से भरे हजारों घड़ों, केसर, चंदन, घी, शहद, केले, खसखस के बीजों, गुड़ और दूध से उनके मस्तक का अभिषेक किया जाता है। इसके लिए एक विशेष मंच बनाया जाता है। 19 दिसंबर 1993 को भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक संपूर्ण हुआ।

13. Gomatesvara, Sravanabelagola, Karnataka

Sravanabelagola is one of the older historic and most important Jain Pilgrim centres in India. It is also the site of the 57' high statue of Lord Bahubali (Gomatesvara) said to be the largest monolithic statue in the world. The statue of Lord Bahubali was created during the reign of the Ganga king, Panchamalla. It was commissioned by his military commander and built by the sculptor Aristanemi in 981 C.E. It has been carved out of one single rock. It shows Lord Bahubali in meditation. It is said that Lord Bahubali stood meditating and prayed with such concentration without any movement, that plants and creepers started growing on his body.

The Maha Mastakabhisheka ceremony which takes place once every 12 years involves the anointing of Lord Bahubali's head with coins, thousands of pots of coconut milk, yoghurt, saffron, sandalwood paste, ghee, honey, bananas, jaggery, poppy seeds and milk from the top of a scaffolding erected for this purpose. The Maha Mastakabhisheka of Lord Bahubali was completed on 19th December, 1993.

14. रानी गुंफा, उदयगिरि, ओड़िशा

रानी गुंफा की गुफाओं में तराश कर बनाए गए कमरों तथा कक्षों की पंक्तियां हैं जिनमें बौद्ध व जैन मठाधिकारी रहते और साधना करते थे। प्राकृतिक चट्टानों को तराश कर दो मंजिले कमरे बनाए गए। इनके सम्मुख एक खुला प्रांगण था जहां श्रृद्धालू एकत्रित हो सकते थे। रानी गुंफा के कक्षों को बड़ी प्रार्थना सभाओं के लिए इस्तेमाल किया जाता था। इन सभा भवनों के दरवाजों और दीवारों को सुन्दर मूर्ति-शिल्पों से अलंकृत किया गया था।

14. Rani Gumpha, Udaigiri, Odisha

The caves at Rani Gumpha consists of series of rock-cut rooms and halls where Buddhist and Jain monks lived, prayed and meditated. The natural hill has been carved to make double storeyed arrangement of room facing an open courtyard for the religious community to congregate. The halls inside Rani Gumpha were used for large prayer meetings. The doorways and walls of these halls were richly decorated with sculptures.

15. मंदिर क्रमांक 17, गुप्त काल, सांची, मध्य प्रदेश

भारत में मंदिरों के विकास के इतिहास में गुप्तकाल का महत्वपूर्ण स्थान है। सांची में जिस मंदिर के भग्नावशेष प्राप्त हुए हैं वह गुप्त काल में निर्मित प्रारंभिक मंदिर है। यह पत्थर का बना हुआ है। इस का गर्भ गृह छोटे आकार का है तथा उस में देव-मूर्ति स्थापित थी। इसका एक प्रांगण भी था जिसमें अत्यलंकृत स्तंभ थे। इसमें सुंदरतापूर्वक बने स्तंभों के साथ एक द्वारमण्डप भी था। ध्यान देने पर देखा जा सकता है कि मंदिर की छत सपाट है। धीरे-धीरे, समय के साथ-साथ यह छत शानदार रूप से बने शिल्पयुक्त शिखर में विकसित हुई। इसी प्रकार के शिखरों को हम बाद में निर्मित मंदिरों में देख सकते हैं। दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रचुर रूप में तक्षित "गोपुरम" या प्रवेशद्वार एवं शिखर होते हैं।

15. Temple No. 17, Gupta Period, Sanchi, Madhya Pradesh

The Gupta Period is important in the history of the development of temples in India. One of the remains of the earliest temple was found at Sanchi. This temple was made of stone and consists of a small room, the *garbha-griha* where the deity was installed. It also has a porch with beautifully designed pillars. It may be noticed that the roof of the temple is flat. Gradually, over a period of time, the roof evolved into richly sculpted spires or *shikharas* that we see in later temples. South India temples have elaborately sculpted *gopurams* or gateways.

16. लौह स्तंभ, गुप्त काल, दिल्ली

लौह स्तंभ गुप्त काल के दौरान शुद्ध लोहे से निर्मित हुआ था। पिछले 1500 वर्ष के अपने अस्तित्व के दौरान इसमें जंग लगने का कोई भी निशान नहीं मिला है। यह 7.20 मीटर ऊंचा है और इसका वजन 3 टन से भी ज्यादा है। यह स्तंभ गुप्त काल की उच्च स्तरीय तकनीक का एक नमूना है।

इतिहास में लौह स्तंभ के उद्भव के विषय में अनेक मत हैं। स्तंभ पर प्राप्त एक गुप्तकालीन लेख यह इंगित करता है कि यह मूलत: राजा चन्द्र की स्मृति में बनाया गया एक विष्णुध्वज था। इस शानदार स्तंभ की सपाट, चौकोर और बुलंद चोटी पर एक छेद है जो यह दर्शाता है कि मूलत: इस मीनार (स्तंभ) पर गरूड़ (विष्णु के वाहन) की एक आकृति थी।

यह भी एक रोचक मान्यता है कि यदि कोई स्तंभ के आस-पास अपनी बांहें डालकर (अपनी पीठ स्तंभ की ओर करके) कुछ मांगता है तो उसकी गुप्त इच्छा पूरी हो जाती है।

16. Iron Pillar, Gupta Period, Delhi

The Iron Pillar was made during the Gupta period out of pure iron. It has not shown any sign of rusting during the last 1500 years of its existence. It is 7.20 metres high and weighs over 3 tonnes. The pillar is an example of the high standard of technology that was prevalent during the Gupta period.

History offers several interpretations to the origin of the Iron Pillar. A Gupta inscription on the pillar records that it was originally a *Vishnudhwaja* set up in memory of King Chandra. The flat, square, towering end of the majestic pillar bears a hole indicating that an image of Garuda (the mount of Vishnu) originally decorated the tower.

Interestingly there goes a belief that if one secretly wishes for something after encircling his arms, around the pillar (with his back to the pillar), his wish will be fulfilled.

17. बाह्य दृश्य, अजंता गुफाएं, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता, मठों और गुफा मंदिरों में निर्मित मूर्तिकला एवं चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है। वघोरा नदी पर घोड़े की नाल की आकार की चट्टानों को तराश कर 30 गुफाएं बनाई गई हैं, जिनमें सुन्दर मूर्तियां एवं भित्तिचित्र हैं।

गुप्तवंश से वैवाहिक संबंध रखने वाले वाकाटक शासकों के शासन काल में इन गुफा एवं मठों का निर्माण हुआ था। वाकाटक शासक हरिसेन के मंत्री और सामंतों के पुत्रों ने संघ की प्रचुर रूप से आर्थिक तथा अन्य रूपों में मदद की थी।

17. Exterior View, Ajanta Caves, Aurangabad, Maharashtra

Ajanta is famous for its monasteries and cave temples. In the horseshoe shaped curved hillside above the Waghora river, there are 30 caves which have beautiful sculptures and paintings.

The cave monastery excavation occurred under the Vakataka rulers who had marital relations with the Gupta dynasty. The Vakataka king, Harisena's minister and some of his feudatory princes lavishly provided money and the means for the *sangha*.

18. बुद्ध का चित्र, अजंता, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

अजंता की गुफाएं बौद्ध कला का एक प्रकार से प्रलेखन हैं। मूर्तिकारों एवं चित्रकारों ने भारतीय कला के सर्वोत्तम रूप को यहां साकार किया है। इस सुन्दर चित्र में भगवान बुद्ध को मठाधिकारी के रूप में चित्रित किया गया है। नगर में भिक्षा ग्रहण करते-करते वे अपने महल में आ जाते हैं। वहां उन्हें उनकी पत्नी व पुत्र मिलते हैं, पर वे इतने ध्यान-मग्न होते हैं कि उन्हें पहचानते ही नहीं। इस भित्तिचित्र में कलाकार ने भगवान बुद्ध पर स्वर्ग से पुष्प वर्षा होते दिखाई है। शिल्पकार ने भगवान बुद्ध की आकृति को ऊंचा आकार दे कर उनकी महानता को दर्शाया है।

18. Painting of Buddha, Ajanta, Aurangabad, Maharashtra

The Ajanta caves are a documentation of Buddhist art. The patrons together with the sculptors and painters present a high quality of Indian art.

This beautiful painting shows the Buddha as a monk. He comes to his own palace but is unable to recognise his wife and son as he is in a state of total detachment. Notice the eyes which emanate peace and compassion. In this picture, the artist has shown a shower of flowers falling from the heavens on Buddha. To express his greatness, the artist has depicted Buddha as larger than life.

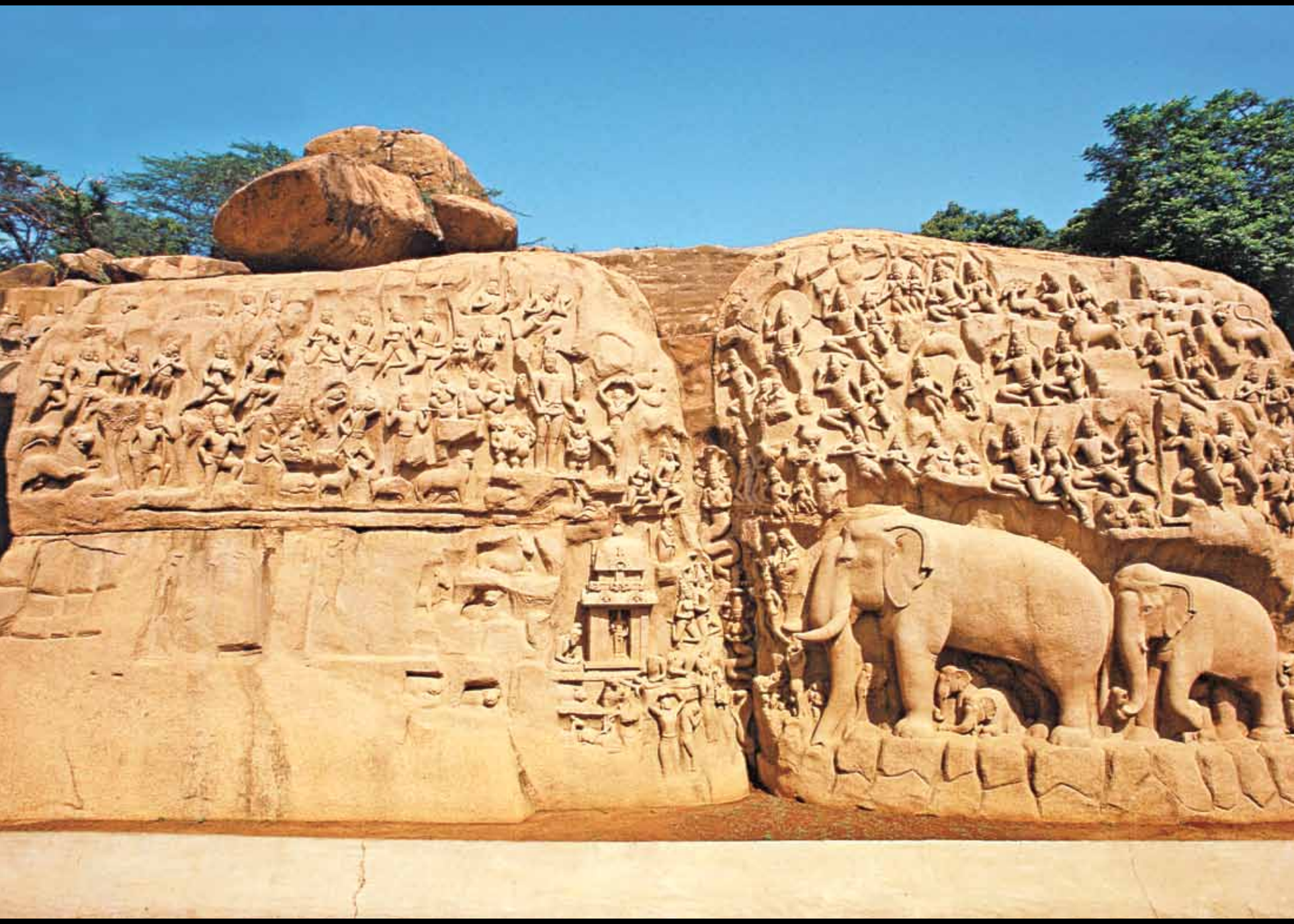

19. उत्कीर्ण फलक, महाबलिपुरम, तमिलनाडु

महाबलिपुरम पल्लवों का बंदरगाह था तथा वहां की गई खुदाई से ज्ञात हुआ है कि उसकी जल-वितरण प्रणाली अत्यंत सुनियोजित थी। यह अपने तट मंदिर, चट्टानों को तराशने की वास्तुकला, गुफाओं, उभारदार उत्कीर्ण शिल्प तथा रथों के लिए प्रसिद्ध है।

महाबलिपुरम की जो अत्यंत उल्लेखनीय मूर्ति-शिल्प रचना है, वह महेन्द्रवर्मन (प्रथम) या उसके बेटे मामल्ला द्वारा निर्मित प्रसिद्ध उभारदार मूर्ति-शिल्प है। यह दो विशाल शिलाखंडों को तराश कर बनाई गई है तथा इसके बीच में एक दरार सी है। मूर्तिकारों ने सूर्य, चंद्रमा तथा परियां आदि खगोलीय शक्तियों एवं पृथ्वी व जल की आकृतियां उत्कीर्ण की हैं। इसे "गंगा का अवतरण" या "अर्जुन का तप" नामों से पहचाना जाता है। इस फलक पर उत्कीर्ण विभिन्न आकृतियों में एक तपस्वी की आकृति विशेष स्थान रखती है। उसे एक पैर पर खड़ा दर्शाया गया है तथा उसके हाथ आसमान की ओर फैले हैं। इस पूरी आकृति की लंबाई 30 मीटर से ज्यादा एवं ऊंचाई लगभग 15 मीटर है।

19. Sculptural Panel, Mahabalipuram, Tamil Nadu

Mahabalipuram was the sea port of the Pallavas and excavations show that the town had a well planned water system. It is famous for its Shore temple, rock cut architecture, caves, sculptural reliefs and *rathas*. The most remarkable sculptural composition at Mahabalipuram is the famous relief attributed to Mahendravarman I or his son Mammalla. It has been carved out of two large boulders, with a narrow fissure between them. The sculptors have carved out celestials like the sun and moon, the earth, water and nymphs. It has been alternately identified as "Descent of Ganges" or Arjuna's Penance. Among the numerous sculptures, a prominent figure is of an ascetic standing on one leg and stretching his arms upwards.

This relief measures nearly thirty metres in length and is more than fifteen metres high.

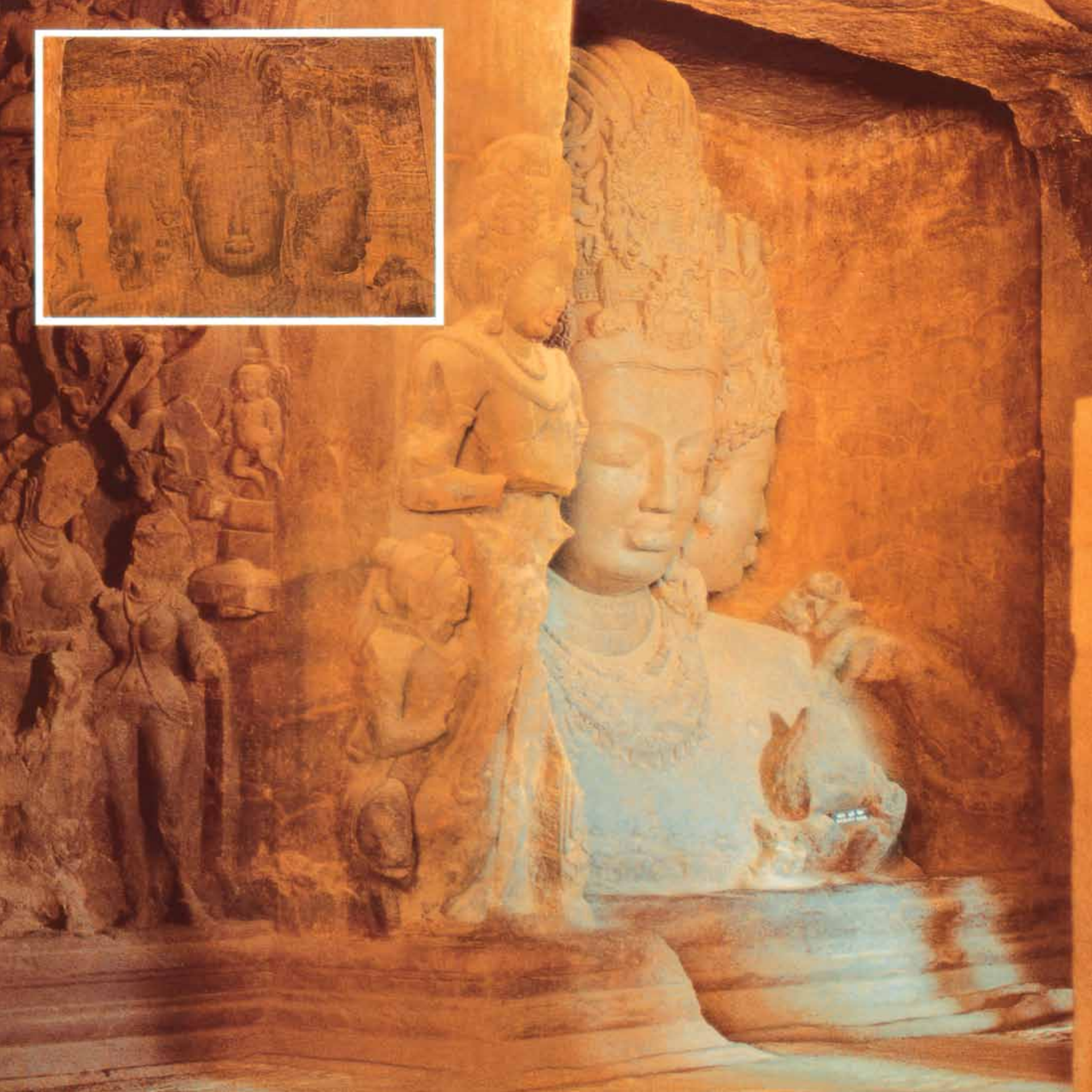

20. त्रिमूर्ति, एलिफेंटा, महाराष्ट्र

इस चित्र में जो मूर्ति दिखाई दे रही है, वह अपने स्थान, आकार और अपने अर्थ के कारण एलिफेंटा की समस्त मूर्तियों में अपना एक विशेष महत्व रखती है। इसे सदाशिव, महेश्वर या महेश मूर्ति भी कहा जाता है। यह तीन मुखों वाली मूर्ति भगवान शिव के विभिन्न रूपों को दर्शाती है। बाई तरफ की मूर्ति में उनके नेत्र खुले हैं एवं उनकी मूंछें दशाई गई हैं। यह उनका भैरव रूप है। मध्य की मूर्ति में वे भव्य, सौम्यता लिए हुए शांति का प्रसार कर रहे हैं। दाई तरफ नारी का रूप है। इस त्रिमूर्ति से जगत में व्याप्त त्रिगुणों क्रमशः तमोगुण, सतोगुण, रजोगुण का अर्थ भी लिया जाता है। कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि यद्यपि मूर्ति में तीन मुख ही हैं पर मूर्तिकार चौथा यहां तक कि पांचवां मुख भी बना सकते थे।

20. Trimurti, Elephanta Caves, Maharashtra

The sculpture seen in the picture is, one of the most significant sculptures of all the images at Elephanta. It is also referred to as Sadashiva, Maheshwara or Maheshamurti. This three-headed figure shows different manifestations of the Lord Siva, on the left (see inset picture), Lord Siva is seen with fully open eyes and is wearing a moustache, this is his Bhairava aspect. In the centre, you can see Siva in his benign form emanating peace and tranquility; and on the right is the feminine Parvati. This Trimurti sculpture is interpreted as the three fundamental qualities present in the Universe—the *Tamas*, the *Satva* and the *Rajas* respectively. Some scholars are of the view that although only three faces are shown in the sculpture, the fourth and even a fifth might have been envisaged by the sculptors.

21. सेंथोम कैथीड्रल, चेन्नइ, तमिलनाडु

ऐसा माना जाता है कि ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में ईसा मसीह का एक शिष्य संत थॉमस था इसाई धर्म के प्रसार-प्रचार के उद्देश्य से पश्चिम एशिया से भारत आए। बहुत वर्षों के बाद, यह कैथीड्रल (धर्ममंदिर) ईसा के इस महान शिष्य की याद में बनवाया गया था। इस कैथीड्रल में एक बड़ा सभा गृह है, जहां सैकड़ों लोग एक साथ प्रार्थना करते हैं। यह कैथीड्रल आकर्षक मूर्तियों एवं नीले, लाल तथा पीले रंग वाले शीशेयुक्त खिड़कियों से सुसज्जित था। रंगीन शीशों का डिजाइन बड़ा ही जटिल था।

21. Santhom Cathedral, Chennai, Tamil Nadu

St. Thomas one of the disciples of Jesus Christ is believed to have come to India from West Asia in the Ist century. He was instrumental in the spread of Christianity in this country. Many years later, a church was built in his memory at Chennai. The church contains a large hall where hundreds of people come to pray. The church is beautifully decorated with sculptures and stained glass windows which have intricate patterns of painted glass in rich colours of blue, red and yellow.

ONE
WAY

22. अगियारी, मुंबई, महाराष्ट्र

8वीं शताब्दी के आसपास अनेक पारसी परिवार अपने पैतृक स्थान इरान को छोड़ कर भारत में बस गए थे। प्राचीन पारसी शिल्पकला को प्राय: 'अवेस्ता' के नाम से जाना जाता है। उनका यह मानना है कि मनुष्य अपने जीवन और धर्म को निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र होता है। वे मूलत: अग्निपूजक हैं। उनके मंदिरों में सदा अग्नि प्रज्जवलित रहती है। हालांकि भारत में पारसी समुदाय बहुत ही छोटा है, पर उनमें आपस में निकट संपर्क है और उन्होंने भारत की समृद्धि और विकास में बहुत योगदान दिया है।

22. Fire Temple, Mumbai, Maharashtra

Around the 8th century C.E., some Zoroastrians left their home in Iran and came to India. The earliest Zoroastrian sculpture is generally known as the *Avesta*. The Zoroastrians believe that man is free to determine his life and faith. The Zoroastrians were basically fire worshippers. In their fire temples, they have a holy fire that burns all the time. Although the Parsi community in India is very small, they are very close knit and have contributed greatly to the development and progress of India.

23. जामा मस्जिद, दिल्ली

शताब्दियों से अरब व्यापारियों के भारत के साथ व्यापारिक संबंध थे तथा नौवीं शताब्दी के आसपास इस्लाम धर्म भारत में पहुंचा था। तब भारतीय संगीत, साहित्य, नृत्य और यहां तक कि वस्त्र धारण करने का तरीका भी इस्लामी संस्कृति से प्रभावित हुआ। मुगल काल में शाहजहां द्वारा निर्मित जामा मस्जिद एशिया की सब से बड़ी मस्जिदों में से एक है और वह भारत में हिंदू-इस्लामी वास्तुकला का एक विशिष्ट उदाहरण है। मुस्लिक त्यौहारों के विशेष दिनों में, इस चार सौ वर्ष पुरानी मस्जिद में, हजारों लोग एक साथ नमाज़ पढ़ते हैं। इस मस्जिद में एक बड़ा प्रांगण है। इसके पश्चिमी भाग में आप तीन गुम्बद देख सकते हैं जो किबला दीवार पर हैं। नमाज पढ़ते समय लोग इसी ओर मुंह करके खड़े रहते हैं। आंगन के बीच में प्रार्थना से पूर्व वजू के लिए जल कुंड है।

23. Jama Masjid, Delhi

For centuries, Arab traders had trade links with India. The region of Islam was introduced to India around the 9th century C.E. Subsequently Indian music, dance, literature and even the building designs were influenced by Islamic culture.

The Jama Masjid built by Shah Jahan in the Mughal period is one of the largest mosques in Asia and is a remarkable example of Indo-Islamic architecture in India. On important Muslim festivals, thousands of people pray together in this four hundred years old mosque. The mosque consists of a large open courtyard. On the west side facing Mecca, you can see three high domes (Gumbaj). Devotees face this direction when they pray. In the centre of the courtyard is a tank for ablutions before prayer.

सांस्कृतिक इतिहास
Cultural History
1

24. स्वर्ण मंदिर, अमृतसर, पंजाब

सिख समुदाय का पवित्रतम मंदिर-स्वर्ण मंदिर पंजाब के एक बड़े नगर अमृतसर में स्थित है। इस शहर की स्थापना चौथे सिख गुरु-गुरु रामदास ने सन् 1577 में की थी। ऐसा माना जाता है कि उनके बेटे तथा पांचवें गुरु अर्जुन देव ने सन् 1579 में इस मंदिर का निर्माण करवाया था। गुरु अर्जुन देव ने एक तालाब के मध्य में एक मंदिर बनवाया था तथा उसके जल को पवित्र कर वहां गुरुग्रंथ साहब की स्थापना की थी।

अमृतसर यह नाम अमृत और सर इन दो शब्दों से मिल कर बना है। सन् 1803 में महाराजा रणजीत सिंह ने इस मंदिर का संगमरमर और सोने से पुनर्निर्माण करवाया था। ऐसा कहा जाता है कि केवल इस के गुंबदों पर ही 400 किलो सोना लग गया था। तभी से इसे स्वर्ण मंदिर कहा जाने लगा है।

स्वर्ण मंदिर परिसर में अनेक ऐतिहासिक महत्व के पवित्र स्थल हैं जिन में सबसे महत्वपूर्ण अकाल तख्त है। इसके दक्षिण में एक बाग है जिसमें बाबा अटल मीनार है। रामगढ़िया मीनार मंदिर परिसर के बाहर स्थित है।

24. The Golden Temple, Amritsar, Punjab

The Golden Temple, the holiest of Sikh shrines is situated at Amritsar, one of the largest cities of Punjab. The city of Amritsar was founded by the fourth guru of the Sikhs, Guru Ram Dass in 1577 C.E. The Golden Temple is believed to have been built by his son and fifth Guru Arjun Dev in the year 1579 C.E. Guru Arjun Dev is said to have raised a temple in the midst of a pool, sanctified its waters and installed the *Granth Sahib*, the holy scripture of the Sikhs, there.

The city of Amritsar takes its name from the sacred pool, — Amrit (nectar) Sar (pool). In 1803 C.E., the Sikh ruler Maharaja Ranjit Singh rebuilt the temple in marble and gold. About 400 kilograms of gold is said to have been used for covering its domes. Ever since, the temple has been known as the Golden Temple.

The Golden Temple complex has a number of shrines of historical importance, the most notable is the *Akal Takht*. To the south of the temple enclosure is a garden in which stands the *Baba Atal* Tower. The *Ramgarhia* minars stand outside the temple enclosure.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the Centre for Cultural Resources and Training
Published by Director, Centre for Cultural Resources and Training, New Delhi
Printed at Aravali Printers & Publishers Pvt. Ltd., New Delhi - 110 020
2013